तृतीय अंक | मूल्य : अमूल्य | जुलाई से सितंबर

TEACHERS OF BIHAR

प्रज्ञानिका

देश की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी टीचर्स ऑफ बिहार की प्रस्तुति

नई शिक्षा नीति

शुभांशु शुक्ला की कहानी

विद्यालय गाथा

शिक्षक गाथा

बीट को ढाल बना सामाजिक बेड़ियाँ तोड़ रही बेटियाँ

ई-पत्रिका प्राप्त करने के लिए QR कोड को स्कैन करें

"प्रज्ञानिका" त्रैमासिक पत्रिका है। जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार की तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। बिहार के शिक्षकों द्वारा इसे प्रकाशित किया गया है।इसमें शिक्षकों के विभिन्न शैक्षणिक कार्यों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिक, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका प्रकाशन अथवा प्रसारण वर्जित है।

इस पत्रिका का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।

प्रज्ञानिका 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।

पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। इसके साथ ही प्रकाशित हर सामग्री की ज़िम्मेदारी लेखक के स्वयं की है।

पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

प्रज्ञानिका

सम्पादक

कुमारी निधि
प्रधान शिक्षिका
प्राथमिक विद्यालय बिरनाबारी,किशनगंज

पाठ-शोधक

डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय
राजकीय आदर्श मध्य विद्यालय अहियापुर, अरवल

तकनीकी सहयोग, डिज़ाइन एवं साज-सज्जा

शिवेंद्र प्रकाश सुमन
इंजीनियर, मुजफ्फरपुर, बिहार

फाउंडर -सह -प्रेरणास्त्रोत एवं मार्गदर्शक

शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय नारायणपुर, बिक्रम, पटना

प्रज्ञानिका टीम

आवरण चित्र साभार: शोभा तिवारी
मध्य विद्यालय घिरसिंडी, नवीनगर,औरंगाबाद

विशेष सहयोग

अनुपमा प्रियदर्शिनी
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय दुधहन
रघुनाथपुर, सिवान

नवाचार

रंजेश कुमार
प्राथमिक विद्यालय छुरछुरिया
फारबिसगंज, अररिया

पोस्टर निर्माण

मधु प्रिया
मध्य विद्यालय रामपुर बी.एम.सी
फारबिसगंज, अररिया

शिक्षण संसाधन

ओम प्रकाश
मध्य विद्यालय दोगच्छी,
नाथनगर, भागलपुर

स्वस्थ रहें मस्त रहें

मृत्युंजयम्
उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय मलहरिया
समेली, कटिहार

शिक्षक समाचार

अभिषेक कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय गोपालपुर नेउरा
सरैया, मुजफ्फरपुर

विद्यालय एवं शिक्षक गाथा

केशव कुमार, प्रधान शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू
प्रखण्ड- मुरौल, जिला- मुजफ्फरपुर

सुर्खियाँ

मृत्युंजय कुमार
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना
यादव टोला
पताही, पूर्वी चंपारण

तस्वीरें बोलतीं हैं

पुष्पा प्रसाद
राजकीय कन्या मध्य विद्यालय कुचायकोट
कुचायकोट, गोपालगंज

विविध

डॉ० अजय कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय चाँपी
कोढ़ा, कटिहार

आलेख

विप्लव कुमार
उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय अरिहाना
आजमनगर, कटिहार

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल
राजकीय मध्य विद्यालय सहसपुर
बारूण, औरंगाबाद

प्रज्ञानिका

अनुक्रमणिका

03. शुभकामना सन्देश
04. सम्पादकीय
05. पुरोवाक्
06. विद्यालय-गाथा
12. शिक्षक गाथा
14. कक्षा-कक्ष गतिविधि
15. नई शिक्षा नीति
18. शिक्षण संसाधन
20. शिक्षक - छात्र पन्ना
21. तस्वीरें बोलती हैं
22. नवाचार
24. ज्ञान पोटली
33. प्रज्ञानिका डिजिटल दुनियां
35. प्रज्ञानिका साहित्य(आलेख,प्रेरक प्रसंग,लघुकथा, कविता, यात्रा वृत्तांत...इत्यादि)
47. बच्चों का कोना
49. स्वस्थ रहें मस्त रहें
50. शिक्षा जगत की खबरें
53. विविध
56. सुर्खियों में
60. सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा

शुभकामना संदेश

"ज्ञान ही शक्ति है" — यह केवल एक उक्ति नहीं, बल्कि हमारी शिक्षा नीति का मूल उद्देश्य है। शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं देती, यह जीवन के हर मोड़ पर सही निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है।

'प्रज्ञानिका' ई-मैगजीन के माध्यम से शिक्षकों, छात्रों और शिक्षा से जुड़े सभी हितधारकों के विचार, प्रयास और अनुभव एक साझा मंच पर प्रस्तुत हो रहे हैं। यह एक अत्यंत सराहनीय प्रयास है जो शिक्षा जगत में सकारात्मक ऊर्जा और नवाचार को प्रोत्साहित करेगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक भी सभी पाठकों के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा तथा शिक्षा के क्षेत्र में एक नई दृष्टि प्रदान करेगा।

मैं इस प्रयास से जुड़े सभी साथियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और आशा करता हूँ कि 'प्रज्ञानिका' निरंतर इसी उत्साह और गुणवत्ता के साथ आगे बढ़ती रहे।"

डॉ. एस. सिद्धार्थ

अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार

संपादकीय

आप सभी सम्मानित एवं महनीय शिक्षक साथियों को मेरा प्रणाम, अभिनंदन !

पुनः हमारी टीम "टीचर्स ऑफ बिहार प्रज्ञानिका" के तृतीय अंक को ले कर उपस्थित हैं।

"ToB प्रज्ञानिका" के पिछले अंक को आप सभी ने इतना प्यार दिया कि मन प्रफुल्लित है, हर्षित है। एक शैक्षणिक पत्रिका को इतना स्नेह देने के लिए आप सब को हृदयतल की गहराइयों से धन्यवाद अर्पण करती हूँ।

साथियों मुझे यह कहते हुए बेहद गर्व की अनुभूति हो रही है कि हम शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध हैं और प्रज्ञानिका के माध्यम से हम इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठा रहे हैं। हमें उम्मीद है कि प्रज्ञानिका बिहार की शिक्षा जगत में एक नए युग की शुरूआत करेगी और हमारे पाठकों को शिक्षा के प्रति और अधिक प्रेरित करेगी।

प्रज्ञानिका का हर पृष्ठ बिहार के शिक्षकों के बेहतरीन कार्यों का साक्षी है। हमे पूरी उम्मीद है कि पुनः यह अंक आप सब के मन पर दस्तक देगी। यूँ ही अपना प्रेम और स्नेह हमारी पूरी "प्रज्ञानिका टीम" पर बनाएं रखें।

खुश रहें, स्वस्थ रहें, मस्त रहें और ऊर्जावान बने रहें। बहुत धन्यवाद।

कुमारी निधि
प्रधान शिक्षिका (BPSC)
राजकीय शिक्षक सम्मान प्राप्त
प्राथमिक विद्यालय बिरनाबारी,
किशनगंज बिहार
9430803248
Nidhisarojc@gmail.com

पुरोवाक्

मित्रो!

पावस ऋतु का आगमन मानव और प्रकृति दोनों को रसपृक्त और सजल बना देता है।एक तरफ जहाँ प्रकृति का कण-कण हरा-भरा हो जाता है वहीं मनुष्य का रोम -रोम प्रफुल्लित हो उठता है।ऐसे में पर्वत भी पुरुष का रूप धरकर जलपूरित तालाबों और मैदानों में अपना सुन्दर अक्स देखकर फूले नहीं समाता।

इसी प्रकार ग्रीष्मकालीन कठिनाइयों के बीत जाने के पश्चात् अब हमारे विद्यालय का कोना -कोना पक्षियों की तरह कलरव करते , हँसते-मुस्कुराते बच्चों से गुलज़ार हो चुका है।ठीक इसी समय प्रज्ञानिका का यह तृतीय अंक भी अपने रंग-बिरंगे विषयों व विविधताओं के साथ आपके समक्ष दस्तक देने को आतुर है।

शिक्षण एवं शिक्षकीय जीवन की अनेकानेक कठिनाइयों के झंझावातों के पश्चात् विद्यालयों में आए सुखद परिवर्तन रुपी पावस को महसूसती कई विद्यालय -गाथाएँ ,शिक्षक-गाथाएँ आपको सुखद अनुभूति कराएँगी।

डिजिटल दुनियाँ की जानकारी हो या कक्षा-कक्ष की गतिविधि , साहित्य हो या स्वास्थ्य , बोलती तस्वीरें हों या कला - परिचय , शिक्षा - जगत् की विभिन्न खबरें हों या कोई नवाचार -- सभी स्तम्भ अपनी ताज़ी एवं नयी खुशबू के साथ प्रस्तुत किये गये हैं।

तो आइये न , प्रेरक प्रसंगों से आप भी लीजिये प्रेरणा और भेजिए अपनी भी रचनाएँ ताकि पाठक हो सकें आपसे और आपकी रचनाओं से परिचित और प्रज्ञानिका होती जाए दिन-ब-दिन सुपरिचित और समृद्ध।

आपकी समुचित प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में -

डा . विनोद कुमार उपाध्याय
राजकीय आदर्श मध्य विद्यालय अहियापुर , अरवल।

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

खगड़िया जिले के परबत्ता प्रखंड स्थित पियरालतीफ पंचायत में आमतौर पर अल्पसंख्यकों की एक बड़ी आबादी निवास करती है। इनमें से आर्थिक रूप से सम्पन्न परिवार के बच्चे दशकों पूर्व से अपनी शिक्षा संबंधी जरुरतों को पूरा करने के लिए अपना घर छोड़ कर बाहर चले जाते थे। पंचायत में दो मध्य विद्यालय अवस्थित था, जिसमें पढ़ने के बाद छात्राओं को आगे पढाई की सुविधा नसीब नहीं होती थी। जबकि छात्रों को पड़ोस के पंचायत में अवस्थित उच्च विद्यालय जाना पड़ता था। पियरालतीफ पंचायत के दो मध्य विद्यालयों में एक विद्यालय उर्दू माध्यम का है, जिसे मध्य मकतब इस्लामपुर के नाम से जाना जाता था।

उत्क्रमित माध्यमिक मकतब इसलामपुर, परबत्ता, खगड़िया

मो० रियाज़ उद्दीन प्रधानाध्यापक

एक विद्यालय ऐसा भी

वर्ष 2014 से पूर्व इस विद्यालय में छः कक्षाओं के बच्चों के पठन-पाठन के लिए न तो पर्याप्त वर्गकक्ष उपलब्ध था। न ही सुव्यवस्थित रसोईघर और न ही बिजली। पोषक क्षेत्र के बच्चे सरकारी विद्यालय में नामांकन से मिलने वाले लाभ को ध्यान में रखते हुए अपना नामांकन कराते तथा अपने गरीब माता-पिता को उनकी खेती, पशुपालन एवं छोटे व्यवसाय में मदद करते थे। कुल आठ पक्का कमरों के साथ-साथ ईंट व खपड़ैल का दो जर्जर कमरा भी कक्षा संचालन के लिए उपलब्ध था, जिसमें वर्ग का संचालन करना हमेशा जोखिम का काम माना जाता था। तीन तरफ से विद्यालय भवन के बीच छोटा सा एक मैदान उपलब्ध था, जहाँ बरसात के दिनों में पानी और कीचड़ लगा रहता था। शेष दिनों में वह मैदान टोले के लोगों के लिये बकरियाँ चराने के लिए उपयोग होता था। बकरियों को वहाँ बाँधने से मना करने पर उनके मालिकों और शिक्षकों के बीच रोज झगड़े हुआ करते थे।

विद्यालय गाथा

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

सभी कक्षाओं को मिलाकर 400 नामांकन था और इस नामांकन के विरुद्ध 150 बच्चों की उपस्थिति होती थी , जो मध्याह्न भोजन की उम्मीद तक विद्यालय में रहते थे। शिक्षा विभाग की कोशिशों के बावजूद इस पूरी व्यवस्था में परिवर्तन के आसार नहीं दिख रहे थे। शिक्षकों का तर्क था कि अभिभावक दिलचस्पी नहीं लेते हैं और अभिभावकों का तर्क था कि शिक्षक अपनी सेवाओं में समर्पण नहीं प्रदर्शित करते हैं।

अभिभावकों के साथ बैठक कर उन्हें जीवन में शिक्षा के महत्व को बताते हुए अपने बच्चों को नियमित रुप से स्कूल भेजने का संकल्प दिलाया। सामाजिक रुप से बैठक आयोजित कर बकरी के बथान को हटवाया तथा मिट्टी भरवाकर मैदान को संपूर्ण रुप से बच्चों के लिए उपलब्ध कराया।जिसमें सुबह सवेरे बच्चों की असेंबली लगने लगी। असेंबली को प्रभावी और गुणात्मक बनाने के उद्देश्य से विद्यालय प्रधान के द्वारा लाउडस्पीकर का इंतेजाम किया गया। जिस समय सरकारी विद्यालयों में लाउडस्पीकर का चलन नहीं था। उस असेंबली के दौरान धीरे-धीरे बच्चों की गूँज से विद्यालय से बाहर चल रहे बच्चों में भी पढाई के प्रति रुचि जगने लगी और नामांकन में उतरोत्तर वृद्धि दिखने लगी तथा यह 400 से 1800 तक पहुँच गया। समाज एवं प्रायोजकों के सहयोग से सभी कक्षाओं में पंखा लगाया गया। मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता को कसौटी पर रखा गया। पठन-पाठन के अतिरिक्त खेल तथा अन्य शिक्षेत्तर विषयों में बच्चों की प्रतिभा को निखारने के लिये गतिविधियाँ आयोजित किया जाने लगा। विद्यालय के बच्चे खेल तथा अन्य विधाओं में जिला एवं राज्य स्तर पर स्थान प्राप्त करने लगे। सोशल मीडिया तथा मेनस्ट्रीम मीडिया इन उपलब्धियों से प्रभावित होकर स्वयं को इससे दूर नहीं रख सका। अलग-अलग फोरमों पर बच्चों को पुरस्कृत किया जाने लगा। वर्ष 2019 में बिहार सरकार के शिक्षा विभाग के द्वारा इस विद्यालय का उत्क्रमण उच्च विद्यालय के रुप में कर दिया गया। इस उत्क्रमण से उन बच्चों के सपनों को उड़ान मिलने लगी जो गरीबी के कारण मध्य विद्यालय के आगे पढ नहीं पा रहे थे। विशेषकर उक्त विद्यालय के पोषक क्षेत्र की छात्राओं के शिक्षा के स्तर एवं मैट्रिक उतीर्ण करने की संख्या में गुणात्मक वृद्धि हुई।

परिस्थितियों के मद्देनजर मध्य विद्यालय मड़ैया पिपरालतीफ में प्रधान के पद पर कार्यरत होकर गुणात्मक परिवर्तन करने वाले मो. रियाजुद्दीन को मध्य मकतब इस्लामपुर की व्यवस्था को पटरी पर लाने के लिये वर्ष 2014 में उन्हें प्रधानाध्यापक बनाकर इस विद्यालय में पदस्थापित किया गया।
अपने पदस्थापना के साथ ही मो. रियाजुद्दीन ने सबसे पहले विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों के साथ बैठक कर उनकी समस्याओं को समझने और उनका समाधान करने की दिशा में काम किया।

विद्यालय गाथा 2

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

जिस इस्लामपुर में हजारों परिवार रहते हैं, वहाँ 2019 से पहले मैट्रिक पास की संख्या अँगुलियों पर गिनी जा सकती थी तथा मैट्रिक पास बालिकाओं की संख्या गिनने के लिये अँगुलियों की भी जरूरत नहीं थी। वहाँ अब घर-घर से निकलकर बच्चे मैट्रिक तथा इंटर पास करने लगे। इस सुधार को देखते हुए शिक्षा विभाग ने भी अपना हाथ बढाया तथा विद्यालय में कम्प्यूटर की सुविधा प्रदान की। भारतीय स्टेट बैंक की तरफ से सेनेटरी पैड वैंडिंग मशीन लगाई गई। नामांकन बढने से शिक्षकों की संख्या 10 से बढकर 35 तथा रसोइयों की संख्या अब एक से बढकर नौ तक पहुँच चुकी है। कमरों की संख्या अब 8 से बढकर 16 हो चुकी है, अर्थात आठ वर्गों का संचालन विद्यालय द्वारा जुगाड़ कक्ष के रूप में किया गया ताकि जगह के अभाव में बच्चों की पढ़ाई बाधित न हो। सुव्यवस्थित रसोईघर और शौचालय बच्चों के जीवनशैली को सुधारने का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। जगह के अभाव और विद्यालयों को सौन्दर्यीकरण के उद्देश्य से गमलों में बागबानी की गई। स्वच्छता को प्रमुखता दी गई। बच्चों को वर्ग कक्ष से इतर सीखने का अवसर प्रदान किया गया। यही वजह था कि जिले के जिला पदाधिकारी एवं उस वक्त के तत्कालीन शिक्षा सचिव के द्वारा विद्यालय के कार्यों को भूरी-भूरी प्रशंसा की गई॥

विद्यालय गाथा

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

आइये आज आपको सुनाते हैं गोपालगंज जिले के सिधवलिया प्रखंड के बुद्धसी पंचायत के मध्य विद्यालय कबीरपुर विद्यालय की कहानी। जी हाँ आज आप पढ़िए कर्मठ ,लगनशील ,नवाचारी शिक्षक की जुबानी उनके विद्यालय के विकास की कहानी।

अष्टभुजा सिंह

गोपालगंज जिले के सिधवलिया प्रखंड के बुद्धसी पंचायत में वर्ष 2005 में प्राथमिक से उत्क्रमित हुआ उत्क्रमित मध्य विद्यालय कबीरपुर विद्यालय जो उस समय मात्र तीन कमरों में चलता था और लगभग सभी सरकारी विद्यालयों की तरह सुविधाओं के अभाव में शैक्षिक गुणवत्ता के लिय संघर्ष कर रहा था उस दौरान मेरी पोस्टिंग वहां होती है जहां पहले से चार नियमित शिक्षकों के साथ एक अन्य शिक्षक भी विद्यालय में पदस्थापित थे। लगभग तीन कट्ठे भूमि होने के बाद भी बाउंड्री न होने के कारण विद्यालय प्रांगण में अनर्गल व्यक्तियों का जमावड़ा हमेशा बना रहता था , लोग विद्यालय प्रांगण में लाकर पशुओं को बांध देते थे। बच्चों की संख्या कम तो थी ही लेकिन सुविधाओं का अभाव बता कोई अच्छी पहल करने को तैयार भी नहीं था। सबसे पहले मेरा ध्यान इस जमावड़े को हटाने के साथ पशुओं को भी विद्यालय प्रांगण से बाहर कर बच्चों की उपस्थित बढ़ाने पर गया जो कुछ दिनों के प्रयास से सफल होने भी लगा जमावड़ा भी हटा ,पशु भी हटे लोगों का विश्वास भी बढ़ा नामांकन भी बढ़ने लगा दूसरा प्रमुख कार्य बच्चों की सफाई और पढ़ाई की गुणवत्ता बढ़ाने पर था ।

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

सन 2006 में जिस दौरान पोशाक राशि सरकार द्वारा दी भी नहीं जा रही थी उस समय अभिभावकों और बच्चों को प्रोत्साहित कर शत प्रतिशत बच्चों को ड्रेस कोड का लक्ष्य हासिल कर लिया जाता है ,पिछड़ा क्षेत्र होने के नाते थोड़ी बहुत मुश्किल आई लेकिन लक्ष्य हासिल हुआ। अगला कदम नामांकन के साथ उपस्थित को बढ़ाना था, जिसके लिए नवाचार को शिक्षण में अपनाकर उस लक्ष्य को भी पूरा कर लिया गया और 2007 आते आते विद्यालय में छात्रों की उपस्थिति लगभग 70% होने लगी चेतना सत्र को आकर्षक बनाया गया। आनन्दायी बनाया गया जिसमे व्यायाम,संगीत, दैनिक चर्चा इत्यादि को सम्मिलित कर बच्चों को विद्यालय में आने के लिए प्रेरित किया गया। बच्चों के अंदर प्रतियोगी भावना बढ़ाने के लिए 2006 से प्रतिभा सम्मान प्रतियोगिता का आयोजन कर विद्यालय के टॉप ट्वेंटी बच्चों को प्रति वर्ष सम्मानित किया जाता है जो निरंतर जारी है 2010 आते आते नियमित शिक्षक अन्यत्र विद्यालय में जा चुके थे शिक्षकों की कमी और बच्चों को उपस्थिति में निरंतर वृद्धि हो रही थी शिक्षकों की कमी को पूरा करने और शिक्षा को सरल और सहज बनाने के लिए बिना सरकारी सहायता से 2010 से स्मार्ट क्लास की स्थापना कर बच्चों को आनन्दयाई शिक्षा का अवसर दिया गया जिससे उपस्थित में वृद्धि के साथ साथ उनकी विषयगत समझ को बढ़ाने के लिए एक डिजिटल प्लेटफॉर्म की नींव डाल दी गई थी ..

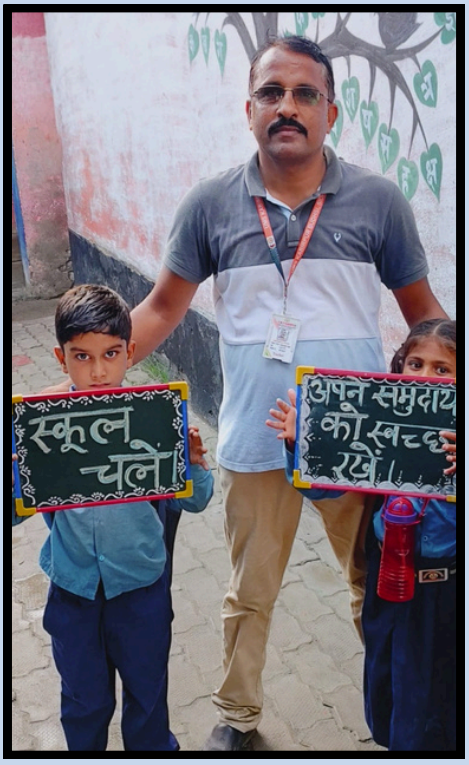

पोषक क्षेत्र में निरन्तर जागरूकता अभियान चलाए जातें हैं। उपस्थिति है नब्बे प्रतिशत से भी अधिक।

विद्यालय गाथा

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

बच्चों के कौशल शक्ति को बढ़ाने के लिए प्रत्येक 14 नवंबर को 2011 से बाल मेला लगाने की शुरुआत की गई जिसकी सबसे खास बात थी कि बच्चों द्वारा तैयार मिट्टी के खिलौनों,मॉडल,गुलदस्ता , बेकार वस्तुओं से विभिन्न सामग्रियों का निर्माण कर मेला में लाने की शुरुआत की गई और जिसकी वस्तुओं को खरीद कर उन्हें उससे वर्ष में एक बार अपने कला के विकाश साथ साथ आर्थिक लाभ भी मिलने लगा जिसमे वस्तुओं की शत प्रतिशत बिक्री की गारंटी मै स्वयं देता हूं जो वस्तुएं अभिभावकों ,बच्चों , शिक्षकों अतिथियों के खरीद से बच जाती हैं उन सारी वस्तुओं को उचित मूल्य पर मैं खरीद लेता हूं जिससे वे मानसिक और आर्थिक रूप से सशक्त होते हैं..उनके आर्थिक समस्या को दूर करने के लिए मैंने चिल्ड्रेंस बैंक का सुझाव रखा जिसपर आम सहमति बना वर्ष 2016 में उसकी स्थापना की जाती है जिसमे 1 रुपये से लेकर 200 तक का लोन बिना ब्याज के दिया जाने लगा जिसका लाभ सैकड़ों बच्चे प्रति वर्ष लेते है और जिसे अब बढ़ा कर 300 रुपए तक कर दिया गया जिनमें बच्चे बिना झिझक के अपनी शैक्षणिक समस्याओं को को दूर करते हैं यदि किसी योजना से एक बच्चे को भी लाभ हो तो सफल माना जाता इस बैंक से सैकड़ों बच्चे लाभान्वित होचुके हैं..इसके अतिरिक्त बच्चों के वैज्ञानिक सोच को बढ़ाने के विज्ञान मेला 2022 से निरंतर लगाया जाता है.. विद्यालय में NCC क्लब है ,आज लगभग दस बच्चे राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्रतियोगिता में इस विद्यालय के पास कर प्रति वर्ष 12000 पा रहें हैं..लगभग बीस बच्चे प्रखण्ड और जिले से चयनित होकर विभिन्न क्षेत्रों में राज्य स्तर पर जिले का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं...2007 से बच्चों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए विद्यालय स्तर पर खेल कूद,गीत संगीत ,सहित लगभग 10 प्रकार की प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है जिसमें प्रतिस्पर्धा की भावना के साथ साथ उन्हें अपनी प्रतिभा को बढ़ाने और दिखाने के लिए एक मंच मिलता है जो वर्षों से निरंतर चलता है ..वर्षों से नवाचारी शिक्षा का परिणाम है कि आज हमारे विद्यालय की उपस्थित लगभग 90% से ऊपर है।

शिक्षक गाथा

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

शिक्षक के सफलता की गाथा

उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रेमनगर, प्रखंड- रुन्नीसैदपुर, जिला सीतामढ़ी

अश्विनी कुमार

शिक्षक गाथा में आपको रुबरू करवाएंगे एक ऐसे शिक्षक की कहानी से जिनकी कहानी सुनकर बहुत से शिक्षकों को प्रेरणा लेनी चाहिए।

तो चलिए हम पढतें हैं उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रेमनगर प्रखंड - रुन्नी सैदपुर, जिला - सीतामढ़ी के विद्यालय अध्यापक (पीजीटी कंप्यूटर विज्ञान) बीएससी tre 1 के शिक्षक अश्विनी कुमार की गाथा।

जब इन्होंने शिक्षक के रूप में योगदान दिया तो उनके विद्यालय में एक अदद कंप्यूटर तक नहीं था। ऐसे में कंप्यूटर शिक्षक को बिना कंप्यूटर के ही कंप्यूटर विषय का पठन पाठन करना होता था। लिहाजा इन्होंने बिना किसी संसाधन के कंप्यूटर की बेसिक जानकारी बच्चों को देनी शुरू कर दी। विद्यालय के प्रति इनका लगाव देखते ही बनता है। पर्यावरणीय जागरूकता को महत्व देते हुए अश्विनी कुमार ने बच्चों को कहा कि अपनी-अपने घर से ला कर एक पेड़ स्वयं के नाम लगाना है। फिर क्या था विद्यालय के जितने भी बच्चे थे सभी ने अपने-अपने नाम से एक पेड़ लाया और पूरे विद्यालय में वृक्षारोपण का कार्यक्रम चला दिया गया। इस प्रकार उनके इस नवाचार से पूरा विद्यालय हरा भरा हो गया।

विद्यालय में हमेशा मोटिवेटर और टीम लीडर की भूमिका में रहते है शिक्षक

उनकी गाड़ी यहीं नहीं रुकी विद्यालय में जब वार्षिक परीक्षा संपन्न हुआ तो उनके द्वारा बच्चों के बीच खुद से तैयार किया हुआ ग्रेड/ कार्ड रिजल्ट कार्ड अभिभावकों की उपस्थिति में वितरण किया गया। जिससे छात्रों और अभिभावकों के बीच एक अलग ही उत्साह का माहौल देखा गया।

विद्यालय के प्रति उनकी तत्परता को देखते हुए, सीआरसी स्तर पर मार्शल कार्यक्रम को प्रतिभा खेल प्रतियोगिता को बेहतरीन ढंग से संपन्न करवाने के लिए एवं उत्कृष्ट सहयोग देने के लिए उन्हें सीआरसी स्तर पर प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित भी किया गया। विद्यालय में हमेशा मोटीवेटर और टीम लीडर की भूमिका में रहने वाले अश्विनी बच्चों को न केवल किताबी ज्ञान बल्कि नैतिकता का पाठ भी पढ़ाते हैं।

शिक्षक गाथा

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

मेरा नाम पुनीता वर्मा है। बचपन से ही मैं एक आइडल शिक्षिका बनना चाहती थी । मुझे शिक्षा के नवाचार में गहरी रुचि थी । यह केवल एक शौक नहीं बल्कि मेरी जिद्द बनकर दिन प्रतिदिन बढ़ती चली गई।

मेरा सपना सच सकार हुआ ,और मैं 2007 में शिक्षिका बन गई। विद्यालय से जुड़ने के बाद मैंने महसूस किया कि ग्रामीण क्षेत्रों से बच्चें अधिकतर आर्थिक रूप से कमजोर परिवार से आते हैं जिनके पास संसाधनों की भारी कमी होती है । अधिकांश बच्चों के घरों में ना तो पढ़ने का माहौल होता है ना हीं उनके अभिभावक पढ़े लिखे होते हैं। ऐसी परिस्थिति में बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान करना मेरे लिए एक चुनौती थी। मैंने हीं इस चुनौती को स्वीकार किया और अपनी प्रयास से शिक्षण के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए हौसला लिए ,मैंने महसूस किया कि बच्चों की बुनियादी समझ को विकसित करने की जरूरत है। मैंने इस दिशा में अपने प्रयास शुरू किए। इसके लिए मैंने संबंधित उम्र सापेक्ष पाठ योजना का इस्तेमाल करना शुरू किया और गतिविधि आधारित शिक्षा पर बल दिया। मेरे निरंतर प्रयासों से बच्चों के अधिगम स्तर में सुधार तो हुआ हीं साथ ही उनमें सीखने के प्रति रुचि जागृत हुई।

पुनिता वर्मा
पुनीता वर्मा- बिहार (सीतामढ़ी)
मध्य विद्यालय सिंगरहिया
1 प्रखण्ड बथनाहा
सीतामढ़ी

बच्चों को स्वावलंबी बनाने के लिए मैंने व्यक्तिगत जुड़ाव पर जोड़ दिया और उनके साथ दोस्ताना व्यवहार कर उन्हें एक आनंददायक वातावरण प्रदान किया। ऐसे वातावरण के निर्माण से बच्चों के अंदर न केवल आत्मविश्वास बढ़ा अपितु उनके सीखने के प्रतिफल शैली में भी क्रांतिकारी बदलाव आई। अब मैं उनके आसपास की चीजों को विषयों से जोड़ने लगी।

शिक्षिका पुनिता वर्मा की कहानी उनकी जुबानी

गतिविधि आधारित शिक्षा एवं नवाचारों के माध्यम से आज छात्र अपनी शिक्षा को नए आयाम दे रहे हैं। छात्र अपने वास्तविक जीवन की चुनौतियों को हल कर रहे हैं दैनिक जीवन में उपयोग आने वाले चीजों से अवगत हो रहे और शिक्षा को अधिक प्रभावशाली एवं उद्देश्य पूर्ण बना रहे हैं। मुझे गर्व है कि मैं बच्चों के जीवन में बदलाव लाने की माध्यम बनी।

कक्षा कक्ष गतिविधि

हम कक्षा कक्ष में कंप्यूटर के पार्ट्स को समझने के लिए बच्चों के द्वारा ही कंप्यूटर के पार्ट्स का टीएलएम बनवातें हैं। और इससे शून्य निवेश पर बच्चे कंप्यूटर के पार्ट्स को और अधिक समझ पाएंगे, क्योंकि जब हम कोई कार्य स्वयं से करते हैं तो उसे ज्यादा बेहतर ढंग से समझ पाते हैं।

विषय :- कंप्यूटर, कक्षा :- 6 से 8वीं

सबनम फैयाज
यू.एम.एस फुलवरिया घंघटी
चकिया पूर्वीचंपारण

सबसे पहले कैंची की सहायता से कार्टून को मॉनिटर के आकार का कट कर लेंगे,फिर उसके बाद चार्ट पेपर को कटिंग करके मॉनिटर के आकार को कवर कर देंगे,फेविकोल से चिपका कर आगे की प्रक्रिया ऐसे ही पूरा कर लेंगे। कंप्यूटर के बाकी हिस्सों के आकार को ऐसे ही पूरा कर लेंगे और आखिरी में पुरानी बिजली के तार से कनेक्ट कर TLM बनाने की विधि पुरी होजायेगी।

सामग्री:-(अपशिष्ट पदार्थ) 1 पुरानी कार्टून, 1 चार्ट पेपर, 1 फेविकोल,कैंची,पुरानी बिजली की तार।

अब हम बच्चों को कंप्यूटर के पार्ट्स के बारे में अलग-अलग बताएंगे कि माउस की बोर्ड मॉनिटर इत्यादि सबके क्या-क्या कार्य हैं इस प्रकार हम इस टीएम के माध्यम से कंप्यूटर के मॉडल को समझ पाएंगे।

अधिगम प्रतिफल:-

स्टूडेंट्स प्रोजेक्ट के माध्यम से आसानी से कंप्यूटर के मॉडल को समझ पाएंगे, ग्रुप एक्टिविटी में सहभागिता बढ़ेगी, और मॉडल को वास्तविक रूप से खुद से कनेक्ट कर प्रैक्टिकल रूप में वो बेहतर कर पाएंगे।

राम बाबू राम
नव. प्रा. वि.
सदाटोल
ईमादपुर, गढ़पुरा,
बेगूसराय

नई शिक्षा नीति

यह शिक्षा नीति 2022 से लागू हुआ।
अब तक का सबसे बड़ा बदलाव है। 10+2 को बदलकर 5 + 3 + 3 + 4 लाया गया।

(1) फाऊंडेशनल स्टेज (5 वर्ष)- इसमें बच्चों की उम्र 3 वर्ष होगा। 3 वर्ष प्ले स्कूल/ आंगनवाड़ी और 2 वर्ष क्लास 1 और 2 के लिए होगा। इसमें परीक्षा का प्रावधान नहीं होगा।
(2) प्रिपेरटॉरी स्टेज (3 वर्ष):- क्लास 3 से 5 इसमें एक्टिविटी, स्टडीज एवं लैंग्वेज पर फोकस दिया जाएगा। इसमें बच्चों का उम्र 8 से 11 वर्ष होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार क्लास 3 से 5 क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाई होगी। इसमें परीक्षा का प्रावधान होगा।
(3) मिडिल स्टेज (3 वर्ष):-इसमें बच्चों की उम्र 11 से 13 वर्ष होगा। क्लास 6 से 8 तक। मिडिल स्टेज के अंतर्गत बच्चों को गणित, विज्ञान, आर्टस और एक भारतीय भाषा के अध्ययन के साथ-साथ कंप्यूटर नॉलेज, वोकेशनल/ टेक्निकल कोर्स अर्थात सिलाई, फर्स्ट एड इत्यादि का भी अध्ययन कराया जाएगा।

(4) *सेकेंडरी स्टेज (4 वर्ष)*:- इसमें बच्चों की उम्र 13 से 17 वर्ष होगी। क्लास 9 तो 12 तक पढ़ाई होगी जो मल्टीप्ल सब्जेक्ट होगा बच्चे कोई भी विषय पढ़ सकते हैं। बच्चों को रटना नहीं है समझना और सोचना है। बच्चों में तार्किक क्षमता का विकास होगा बच्चे किसी भी विषय को पढ़ सकते हैं एक फॉरेन लैंग्वेज भी पढ़ना होगा।
पॉजिटिव थिंकिंग-
जीडीपी का लगभग 6% प्रतिशत शिक्षा पर खर्च किया जाएगा। इसके अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया जाएगा। व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से रोजगार के अवसर मिलेंगे। साथ ही TLM / प्रोजेक्टर /प्रेजेंटेशन के द्वारा पढ़ाया जाएगा।
टीचर्स ट्रेनिंग 4 वर्षों का होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के छह प्रमुख परिवर्तन

डॉ. शैल प्रज्ञा,
राजकीयकृत आदर्श उच्च विद्यालय नयागांव,
सुल्तानगंज,भागलपुर

वे छह मुख्य परिवर्तन, जिन्हें हर विद्यार्थी, माता-पिता और शिक्षक को समझना चाहिए।

1. 4-वर्षीय स्नातक कार्यक्रम और लचीले प्रवेश-निकास विकल्प

NEP 2020 के तहत उच्च शिक्षा को अधिक लचीला और विद्यार्थी केंद्रित बनाया गया है।

अब छात्र 3 या 4 वर्ष की अवधि वाला स्नातक कार्यक्रम चुन सकते हैं, जिसमें कई प्रवेश और निकास (entry-exit) विकल्प होंगे:

1 वर्ष पूरा करने पर प्रमाणपत्र

2 वर्षों के बाद डिप्लोमा

3 वर्ष बाद स्नातक की डिग्री

4 वर्ष बाद शोध-योग्य (Research Oriented) स्नातक डिग्री

यह संरचना उन विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से सहायक होगी जो किसी कारणवश अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ने के लिए मजबूर होते हैं। यह नई प्रणाली लचीलापन और जीवनभर सीखने को प्रोत्साहित करती है।

2. शिक्षा की शुरुआत अब 3 वर्ष की उम्र से – 5+3+3+4 ढांचा

पहले की 10+2 प्रणाली को समाप्त कर नई 5+3+3+4 प्रणाली लागू की गई है, जिसमें बच्चे की मानसिक और सामाजिक विकास अवस्था के अनुसार शिक्षा दी जाएगी।

यह चार चरणों में विभाजित है:

प्रारंभिक चरण (3-8 वर्ष): 3 वर्ष पूर्व-प्राथमिक + कक्षा 1-2

तैयारी चरण (8-11 वर्ष): कक्षा 3-5

माध्यमिक चरण (11-14 वर्ष): कक्षा 6-8

उच्चतर माध्यमिक चरण (14-18 वर्ष): कक्षा 9-12

इस संरचना से बाल्यावस्था में सीखने की नींव मजबूत होगी और शिक्षा जीवन से अधिक जुड़ी होगी।

3. PARAKH सर्वेक्षण – सीखने का मूल्यांकन प्रणालीगत रूप से

NEP 2020 के अंतर्गत PARAKH (Performance Assessment, Review, and Analysis of Knowledge for Holistic Development) की स्थापना की गई है, जो एक राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र है।

इसके कार्य:

छात्रों की वास्तविक समझ और क्षमता का मूल्यांकन

बोर्ड परीक्षाओं में सुधार हेतु दिशा-निर्देश

राज्यों के शिक्षा बोर्ड्स के साथ समन्वय

उदाहरण: दिसंबर 2024 में कक्षा 3, 6 और 9 के छात्रों पर सर्वे किया गया जिसमें यह देखा गया कि कितने छात्र ₹100 में लेनदेन कर सकते हैं या कितने छात्र अपनी कक्षा स्तर की पुस्तक पढ़ सकते हैं। जुलाई 2025 में आए परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि नींव स्तर पर छात्रों में बड़ी सीखने की खाई है।

4. व्यवसायिक शिक्षा (Vocational Education) – कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा
(इस अनुभाग को बिहार के परिप्रेक्ष्य में विस्तार से जोड़ा गया है)
NEP 2020 के अंतर्गत यह लक्ष्य रखा गया है कि 2025 तक कम-से-कम 50% विद्यार्थियों को कक्षा 6 से ही व्यवसायिक शिक्षा से जोड़ा जाए। व्यवसायिक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को केवल शैक्षणिक ज्ञान नहीं, बल्कि रोजगार योग्य व्यावहारिक कौशल भी प्रदान करना है।
बिहार में व्यवसायिक शिक्षा की आवश्यकता और संभावनाएं:
बिहार एक ऐसा राज्य है जहाँ परंपरागत शिक्षा का प्रभुत्व है लेकिन रोजगारोन्मुख कौशल की भारी कमी है। NEP 2020 बिहार जैसे राज्यों के लिए एक स्वर्ण अवसर है जहाँ युवा जनसंख्या बड़ी मात्रा में है लेकिन रोजगार सीमित हैं।
बिहार में प्रभावी व्यवसायिक कोर्सेस:
1. आईटी और कंप्यूटर कौशल – डिजिटलीकरण के युग में बिहार के छात्रों के लिए बेसिक कंप्यूटर, ग्राफिक डिजाइनिंग, डेटा एंट्री ऑपरेटर जैसे कोर्स अति उपयोगी होंगे।
2. इलेक्ट्रिशियन, प्लम्बर, वेल्डर जैसे तकनीकी कोर्स – ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे उद्यम खोलने या नौकरी पाने में सहायक।
3. कृषि-आधारित प्रशिक्षण – जैसे जैविक खेती, डेयरी प्रबंधन, मधुमक्खी पालन, मछली पालन, जो बिहार के ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में अत्यंत व्यावहारिक हैं।
4. स्वास्थ्य सेवाएं – प्राथमिक चिकित्सा, ए.एन.एम., लैब तकनीशियन जैसी शिक्षा स्थानीय स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाएगी।
5. हस्तकला और कुटीर उद्योग – जैसे सिलाई-कढ़ाई, बुनाई, मूर्ति निर्माण आदि, विशेष रूप से महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता का रास्ता खोल सकती हैं।
इस दिशा में बिहार सरकार ने कौशल विकास मिशन, पॉलिटेक्निक संस्थानों और आई.टी.आई. केंद्रों के माध्यम से कई योजनाएं शुरू की हैं। NEP 2020 के अंतर्गत इन कार्यक्रमों को मुख्यधारा की स्कूली शिक्षा से जोड़ना अति आवश्यक होगा।

5. भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित नए पाठ्यक्रम
NEP 2020 के अंतर्गत माध्यमिक स्तर पर एक चयनात्मक पाठ्यक्रम प्रस्तावित है जो छात्रों को भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge Systems) से परिचित कराएगा।
यह विषय निम्नलिखित क्षेत्रों से जुड़ा होगा:
गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा, योग, स्थापत्य कला, भाषाविज्ञान, साहित्य
कृषि, संगीत, राजनीति, खेल, आयुर्वेद
पर्यावरण संरक्षण और शासन प्रणाली

6. शिक्षकों के लिए न्यूनतम योग्यता – 4-वर्षीय समन्वित B.Ed. कार्यक्रम
NEP 2020 के अनुसार 2030 तक शिक्षक बनने के लिए न्यूनतम योग्यता एक 4-वर्षीय एकीकृत B.Ed. डिग्री होगी।

शिक्षण संसाधन

ओम प्रकाश, भागलपुर

निवेदिता कुमारी

राजेश कुमार,किशनगंज

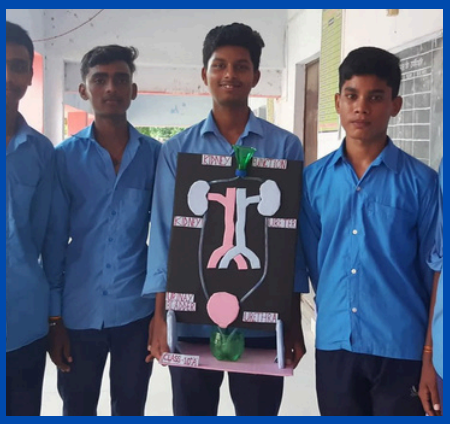

विजेता राय

अमृता सिन्हा

उषा कुमारी

मो० दानीश

शिक्षण संसाधन

ओम प्रकाश, भागलपुर

प्रीति नंदा

ओम प्रकाश

सुचित्रा स्तुति

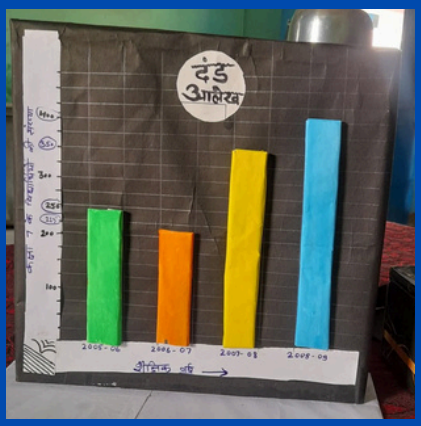

ज्योत्स्ना सौरभ

शांतनु सिंह

पमिता यादव

शिक्षक - छात्र पन्ना

तस्वीरें बोलती हैं

पुष्पा प्रशाद

प्राथमिक विद्यालय कोरमथु, एसएसी, गया

मध्य विद्यालय जगदीशपुर, भागलपुर

उत्क्रमित मध्य विद्यालय फुलवरिया घंघटी, चकिया, पूर्वी चंपारण

नवसृजित प्राथमिक विद्यालय बेनीपुर, वैशाली

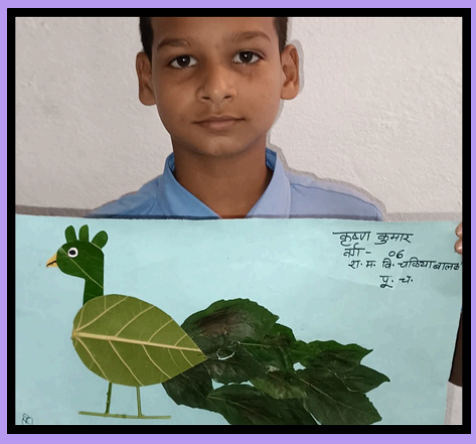

राजकीय मध्य विद्यालय चकिया, बालक, पूर्वी चंपारण

प्राथमिक विद्यालय प्रखंड कॉलोनी, फुलवारीशरीफ, पटना

नवाचार

रंजेश कुमार, अररिया

लगातार हो रहे नवाचारों की श्रृंखला में हम आज आपके लिए लेकर आए हैं एक ऐसे नवाचारी शिक्षक की कहानी जिनसे शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉक्टर एस सिद्धार्थ भी प्रभावित हुए हैं। और जिनकी कहानी सुनकर आपको प्रेरणा जरुर मिलेगी। तो चलिए पढ़ते हैं नवाचार की कहानी शिक्षक की जुबानी .....

सौरभ कुमार
मध्य विद्यालय बसमतिया,
नरपतगंज, अररिया

मध्य विद्यालय बसमतिया में मेरी ज्वाइनिंग अंग्रेजी विषय के शिक्षक के रुप में हुई। इस विद्यालय में में शैक्षणिक वातावरण को बेहतर बनाने के लिए मैने कई प्रयोग किए जिसमें अधिकांश में मुझे सफलता प्राप्त हुई।

मैने सर्वप्रथम यह प्रयास किया कि विद्यालय में सबसे महत्वपूर्ण चीज़ों में से एक है हमारा "चेतना सत्र" तो मैं यहां क्या बेहतर कर सकता हूं? तो मैने पाया कि यहां सबकुछ तो पहले से बढ़िया ही चल रहा है लेकिन संविधान की प्रस्तावना में कुछ बदलाव कर सकता हूं, विद्यालय में प्रस्तावना परंपरागत तौर से चल रहा था जिसे मैने थोड़ा सा बेहतर करने का प्रयास किया। प्रस्तावना को मैथिली भाषा में करवाने के लिए प्रयास किया और बच्चों ने इसे बहुत ही आशावादी रुप से अपनाया। हमारा अगला प्रयास रहेगा कि बच्चे इसे अंग्रेजी में भी कर सके। विद्यालय के HM भूपेंद्र सर व श्याम सर ने इसको बेहतर रुप देने में मुझे और बच्चों की बहुत मदद किए।

मैने अगला प्रयोग मेरे खुद के अध्ययन सामग्री को बेहतर रुप देने का रहा, जिला शिक्षा पदाधिकारी के कई निर्देश शिक्षकों को उनके अध्ययन सामग्री बनाने को लेकर रहता रहा। मैने अपने अध्ययन सामग्री को बेहतर ढंग देने के प्रयास अब तक जारी रखा हूं, मैने समय के साथ कई बदलाव अपने अध्ययन सामग्री में किया, मैने एक विशेष मुहर बनवाया जिसमें मेरा नाम, मेरा, विषय, कक्षा के नाम, दिनांक का स्थान आदि पूर्व से उसपर छपा रहता था जिससे की मेरा समय इन सब चीजों को लिखने से बच जाता था। मैने अभी हाल में ही एक टीचर्स डायरी सह लेसन प्लान श्याम सर की सहायता से बनाया जो दिखने में बहुत ही सुंदर साथ ही शिक्षक उपयोगी भी हैं। आपको मैं बता भी दूं कि मेरे अध्ययन सामग्री और शैक्षणिक नवाचार को देखते हुए मुझे विगत 22 मार्च, बिहार दिवस के अवसर पर जिला शिक्षा पदाधिकारी द्वारा सम्मानित भी किया गया था। आगे भी मै इसमें कई उपयोगी बदलाव करता रहूंगा।

नवाचार

रंजेश कुमार, अररिया

मैने हर शनिवार "क्विज प्रतियोगिता" कराने का फैसला लिया, शुरुआत में इसके कुछ अच्छे रिजल्ट नहीं दिखे तो मैने इसमें कुछ बदलाव किया। मैने खुद के पैसे से एक ट्रॉफी खरीदा और बच्चों को बताया कि जो भी ग्रुप क्विज में जीतेगा उसे यह ट्रॉफी अगले क्विज प्रतियोगिता तक अपने वर्ग कक्ष में रखने को मिलेगा, फिर मैने इसमें चाकलेट थ्योरी को डाला जिसकी सराहना ACS सर ने हाल के वीडियो कॉल में मेरे से बात चित में किए। एक और चीज मैने इसमें जोड़ा वह था "पर्सन ऑफ द quiz" इसके HM सर से रिक्वेस्ट कर मैने मेडल खरीदा और बच्चों को प्रत्येक शनिवार क्विज के अंत में दिए।

मैने अगला प्रयोग जो किया मेरे लिए सबसे खास है यह, प्रत्येक सोमवार को मैं किसी एक क्लास को एक टॉपिक देता हूं और कहता हूं कि सभी को चार बच्चों का एक ग्रुप बनाना है और शनिवार तक इस टॉपिक को तैयार कर के प्रदर्शित करना है। बच्चों को पता भी नहीं चलता होगा कि यह कार्य करने से उनको कितना फायदा मिलता हैं, मजे मजे में प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग भी हो जाती है और उनके बोलने, पढ़ने और लिखने का कौशल भी विकसित हो रहा है। शनिवार को Viva test के तौर पर PBL का प्रदर्शनी होता है, जो ग्रुप विजेता होते है उसके मेम्बर को अगले सोमवार चेतना सत्र में सम्मानित किया जाता है और वहीं पर दूसरे वर्ग को दूसरा टॉपिक आगामी शनिवार के लिए दे दिया जाता है।

अगला प्रयोग विद्यालय में आए रोबोटिक कीट्स आदि के साथ किया। मै इसका उपयोग बच्चों को करवाने का प्रयास करता हूं, और बच्चे इसमें विशेष दिलचस्पी लेते हैं, बच्चों ने इसका शानदार प्रयोग करके कई ओजेक्ट्स बनाएं जिसे " obstacles avoiding robot" खास रहा, कई बार बच्चे इसमें असफल रहते थे, जब मैं उनकी असफलता को देखता तो मुझे खुद की योग्यता में कमी दिखती थी और जब बच्चे सफल होते थे तो मुझे भी उतना ही प्रसन्नता प्राप्त होती थीं।

मै एक और प्रयोग किया हूं, बच्चों में लेखन कौशल के विकास के लिए, मैने वर्ग 6 - वर्ग 10 तक के बच्चों को बच्चों कुल 10टॉपिक दिए जिसमें मेरा प्यार गांव, मेरा प्यार विद्यालय, गांव की सुंदर तस्वीर, विद्यालय की सुंदर तस्वीर इत्यादि सब थे,, और कहा गया कि जो भी बच्चे इसमें प्रथम, द्वितीय और तृतीय आयेंगे उनको सम्मानित भी किया जाएगा। बच्चों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए मेरे पास अपना अपना फोल्डर जमा किए।

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

✅ राजगीर

1. राजगीर किस जिले में स्थित है?
A. नालंदा
B. गया
C. भागलपुर
D. पटना
उत्तर: A. नालंदा

2. राजगीर का प्राचीन नाम क्या था?
A. वैशाली
B. मगध
C. राजगृह
D. पाटलिपुत्र
उत्तर: C. राजगृह

3. राजगीर किन दो पहाड़ियों के बीच स्थित है?
A. उदयगिरि और वैभारगिरि
B. उदयगिरि और चन्दगिरि
C. वैभारगिरि और विपुलगिरि
D. ऋषभगिरि और चन्द्रगिरि
उत्तर: C. वैभारगिरि और विपुलगिरि

4. राजगीर में कौन-सा प्रसिद्ध 'गर्म जल कुंड' स्थित है?
A. सूर्य कुंड
B. ब्रह्म कुंड
C. विष्णु कुंड
D. शिव कुंड
उत्तर: B. ब्रह्म कुंड

5. राजगीर किस धर्म का प्रमुख तीर्थ स्थल है?
A. जैन धर्म
B. बौद्ध धर्म
C. हिन्दू धर्म
D. सभी
उत्तर: D. सभी

6. गृद्धकूट पर्वत (Vulture's Peak) कहाँ स्थित है?
A. वैशाली
B. राजगीर
C. बोधगया
D. नालंदा
उत्तर: B. राजगीर

7. राजगीर में प्रथम बौद्ध संगीति (Council) कब हुई थी?
A. ईसा पूर्व 483
B. ईसा पूर्व 543
C. ईसा पूर्व 273
D. ईसा पूर्व 100
उत्तर: A. ईसा पूर्व 483

8. राजगीर किस राजा की राजधानी रही है?
A. अशोक
B. बिंबिसार
C. अजातशत्रु
D. चंद्रगुप्त
उत्तर: B. बिंबिसार

9. राजगीर में स्थित 'शांति स्तूप' किस देश के सहयोग से बनवाया गया था?
A. भारत
B. चीन
C. जापान
D. श्रीलंका
उत्तर: C. जापान

10. राजगीर में रोपवे (Ropeway) कहाँ तक जाता है?
A. गृद्धकूट पर्वत
B. नालंदा विश्वविद्यालय
C. अशोक स्तंभ
D. वैशाली गार्डन
उत्तर: A. गृद्धकूट पर्वत

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

1. प्रश्न : लार्ड कर्जन द्वारा 1902 में स्थापित पुलिस आयोग का अध्यक्ष कौन था?
उत्तर : एन्ड्रयू फ्रेजर
2. प्रश्न : 1902 में किस आयोग की स्थापना पुलिस सुधारों के लिए की गई थी?
उत्तर : पुलिस आयोग
3. प्रश्न : 1902 में किस संस्था को "रॉयल इंडियन मिलिट्री कॉलेज" के रूप में विकसित किया गया?
उत्तर : कॉलेज ऑफ मिलिट्री इंजीनियरिंग, पुणे
4. प्रश्न : 1902 में बंगाल के गवर्नर जनरल कौन थे?
उत्तर : लार्ड कर्जन
5. प्रश्न : भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में 1902 का वर्ष किस प्रकार महत्वपूर्ण था?
उत्तर : यह वर्ष विभाजन की तैयारी और प्रशासनिक सुधारों के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण था।
6. प्रश्न : पुलिस आयोग 1902 का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर : भारतीय पुलिस प्रणाली में सुधार करना
7. प्रश्न : 1902 में किस ब्रिटिश अधिकारी ने कहा था कि भारत में पुलिस की स्थिति "भ्रष्ट और अमानवीय" है?
उत्तर : सर एंड्रयू फ्रेजर
8. प्रश्न : लार्ड कर्जन ने 1902 में किस रिपोर्ट के आधार पर प्रशासनिक सुधार किए?
उत्तर : फ्रेजर समिति की रिपोर्ट
9. प्रश्न : 1902 में पुलिस आयोग की रिपोर्ट के कितने मुख्य सुझाव थे?
उत्तर : 27
10. प्रश्न : 1902 में कांग्रेस अधिवेशन कहाँ हुआ था और इसकी अध्यक्षता किसने की?
उत्तर : अहमदाबाद, अध्यक्ष - एस. एन. बनर्जी
11. प्रश्न : लार्ड कर्जन द्वारा 1902 में किस आर्थिक नीति को प्राथमिकता दी गई?
उत्तर : रेलवे विस्तार और संरचनात्मक सुधार
12. प्रश्न : 1902 में भारतीय प्रेस और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को लेकर कौन सा कानून लागू नहीं था?
उत्तर : प्रेस एक्ट 1908 (यह बाद में आया)
13. प्रश्न : 1902 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की गतिविधियाँ किस प्रकार की थीं?
उत्तर : नरमपंथी विचारों पर आधारित और प्रार्थनात्मक राजनीति की ओर
14. प्रश्न : किस अधिनियम ने 1902 में पुलिस की जवाबदेही पर बल दिया?
उत्तर : पुलिस आयोग की सिफारिशों पर आधारित नियम
15. प्रश्न : 1902 में किस क्षेत्र में जनजातीय विद्रोह की घटनाएँ दर्ज की गई थीं?
उत्तर : छत्तीसगढ़ और उड़ीसा क्षेत्र

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

🌸 फूलों से संबंधित महत्वपूर्ण वैकल्पिक प्रश्नोत्तर:

1. फूल का कौन सा भाग जनन में भाग लेता है?
A) पंखुड़ी
B) दलपुंज
C) पुंकेसर और अंडप
D) पर्ण
✅ उत्तर: C) पुंकेसर और अंडप

2. फूल के वह भाग जो कीटों को आकर्षित करते हैं, वे कौन से हैं?
A) दलपुंज
B) पुंकेसर
C) अंडप
D) बीजाणु
✅ उत्तर: A) दलपुंज

3. फूल का नर जनन अंग क्या कहलाता है?
A) अंडप
B) पुंकेसर
C) दलपुंज
D) स्त्रीकेसर
✅ उत्तर: B) पुंकेसर

4. फूल का मादा जनन अंग क्या कहलाता है?
A) दलपुंज
B) पुंकेसर
C) अंडप
D) पर्ण
✅ उत्तर: C) अंडप

5. पुंकेसर में कौन-कौन से भाग होते हैं?
A) वर्तिकाग्र और अंडाशय
B) परागकोष और तंतु
C) दल और पंखुड़ी
D) बीज और फल
✅ उत्तर: B) परागकोष और तंतु

6. अंडप में मुख्यतः कितने भाग होते हैं?
A) एक
B) दो
C) तीन
D) चार
✅ उत्तर: C) तीन
(वर्तिकाग्र, वर्तिका, अंडाशय)

7. परागण किसे कहते हैं?
A) बीज बनने की क्रिया
B) फल बनने की क्रिया
C) परागकणों का वर्तिकाग्र पर गिरना
D) परागकणों का कीटों से नष्ट होना
✅ उत्तर: C) परागकणों का वर्तिकाग्र पर गिरना

8. निम्नलिखित में से कौन-सा फूल द्विलिंगी होता है?
A) कद्दू
B) गुलाब
C) मक्का
D) नारियल
✅ उत्तर: B) गुलाब

9. किस फूल में केवल नर जनन अंग होते हैं?
A) द्विलिंगी फूल
B) पुंलिंगी फूल
C) स्त्रीलिंगी फूल
D) निष्क्रिय फूल
✅ उत्तर: B) पुंलिंगी फूल

10. फूल किस अंग का रूपांतर होता है?
A) तना
B) पत्ती
C) मूल
D) फल
✅ उत्तर: B) पत्ती

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

11. परागण और निषेचन में अंतर क्या है?

✅ उत्तर: परागण – परागकण का वर्तिकाग्र पर गिरना, निषेचन – अंडाणु और परागकण का मिलन

12. फूल का कौन सा भाग फल में परिवर्तित होता है?

✅ उत्तर: अंडाशय

13. फूलों की रंगीन पंखुड़ियाँ किसके लिए होती हैं?

✅ उत्तर: कीटों को आकर्षित करने के लिए

14. पुष्पवृंत किसे कहते हैं?

✅ उत्तर: वह डंठल जो फूल को तने से जोड़ता है

15. किस पौधे में परागण जल द्वारा होता है?

✅ उत्तर: हाइड्रिला

16. मक्का का परागण किससे होता है?

✅ उत्तर: हवा

17. निषेचन के बाद अंडाणु किसमें परिवर्तित होता है?

✅ उत्तर: बीज में

18. पुष्पांगों की कुल संख्या कितनी होती है?

✅ उत्तर: चार (दलपुंज, पुंकेसर, अंडप, बाह्यदलपुंज)

19. फूल में सबसे बाहरी चक्र क्या कहलाता है?

✅ उत्तर: बाह्यदलपुंज (सेपल)

20. दलपुंज में क्या होते हैं?

✅ उत्तर: पंखुड़ियाँ

21. फूलों की सुगंध किस अंग से आती है?

✅ उत्तर: पंखुड़ियों से

22. पुंकेसर में क्या होता है?

✅ उत्तर: तंतु और परागकोष

23. वर्तिका का कार्य क्या है?

✅ उत्तर: परागकणों को अंडाशय तक पहुंचाना

24. किसे पुष्प का प्रजनन अंग कहा जाता है?

✅ उत्तर: पुंकेसर और अंडप

25. फूल में कितने अंडाणु हो सकते हैं?

✅ उत्तर: एक या एक से अधिक

26. फूल की संरचना में कौन अस्थायी अंग होता है?

✅ उत्तर: दलपुंज

27. कौन-से फूल रात में खिलते हैं?

✅ उत्तर: ब्रह्मकमल

28. किस प्रक्रिया में बीज बनता है?

✅ उत्तर: निषेचन

29. किसे निषेचन के बाद फल कहा जाता है?

✅ उत्तर: अंडाशय

30. किसे निषेचन के बाद बीज कहा जाता है?

✅ उत्तर: अंडाणु

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

31. पुष्प का वह भाग जो सबसे आकर्षक होता है?

✅ उत्तर: दलपुंज

32. फूलों का अध्ययन किस विज्ञान के अंतर्गत आता है?

✅ उत्तर: वनस्पति विज्ञान

33. फूलों की संरचना की इकाई क्या है?

✅ उत्तर: पुष्पदंड

34. कौन-से फूल एकलिंगी नहीं होते?

✅ उत्तर: सूरजमुखी

35. कौन-से अंग निषेचन के लिए आवश्यक हैं?

✅ उत्तर: पुंकेसर और अंडप

36. दल और बाह्यदल में क्या अंतर है?

✅ उत्तर: दल रंगीन होता है, बाह्यदल हरे रंग का

37. फूल में बीज किस भाग से बनता है?

✅ उत्तर: अंडाशय के अंदर अंडाणु से

38. कौन-सा फूल कीटों द्वारा परागण करता है?

✅ उत्तर: गुलाब

39. किसे स्त्री प्रजनन अंग कहते हैं?

✅ उत्तर: अंडप

40. पुष्प के कितने प्रमुख भाग होते हैं?

✅ उत्तर: चार

41. किस अंग में परागकण बनते हैं?

✅ उत्तर: परागकोष

42. कौन से फूल में केवल मादा अंग होता है?

✅ उत्तर: स्त्रीलिंगी फूल

43. फूल की सबसे भीतरी संरचना कौन-सी होती है?

✅ उत्तर: अंडप

44. परागकण किसके द्वारा वर्तिकाग्र तक पहुँचते हैं?

✅ उत्तर: कीट, हवा या जल

45. किस फूल में निषेचन नहीं होता?

✅ उत्तर: बंध्य फूल

46. द्विलिंगी फूलों में क्या होता है?

✅ उत्तर: दोनों – नर और मादा अंग

47. किसके बिना परागण संभव नहीं है?

✅ उत्तर: परागकण

48. परागण के कितने प्रकार हैं?

✅ उत्तर: दो (स्व परागण और पर परागण)

49. फूलों का मुख्य कार्य क्या है?

✅ उत्तर: जनन

50. परागण और निषेचन के परिणामस्वरूप क्या बनता है?

✅ उत्तर: बीज और फल

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

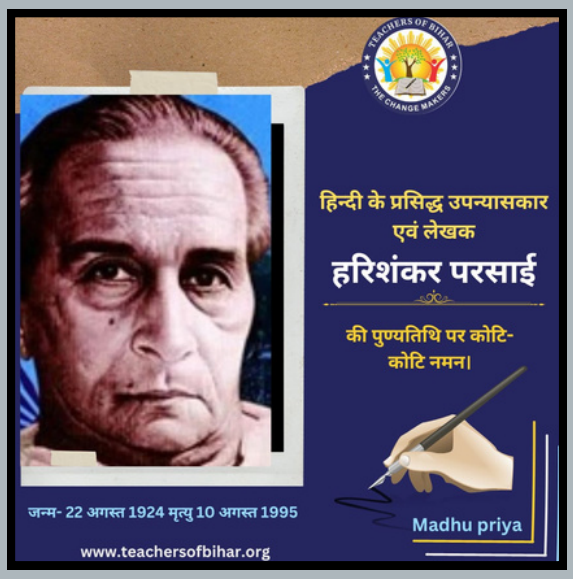

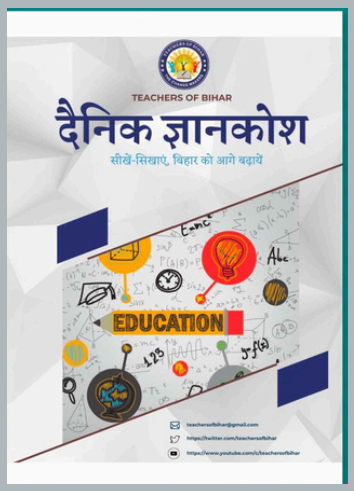

टीचर्स ऑफ बिहार* द्वारा प्रकाशित *"दैनिक ज्ञानकोश"* पत्रिका बिहार के शिक्षकों एवं छात्र/छात्राओं के शैक्षिक बेहतरी के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है। इसमें सम्मिलित सामग्री शिक्षकों को उत्कृष्ट शिक्षण में मदद करती है और छात्र/छात्राओं के ज्ञान को व्यापक बनाती है। आइए, हम सब मिलकर इस अनूठे प्रयास का हिस्सा बनकर शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार और उत्कृष्टता को बढ़ावा दें।

इं. शिवेंद्र प्रकाश सुमन

Classroom

Google Classroom

शिक्षकों के लिए एक आसान ऑनलाइन क्लासरूम, जहाँ असाइनमेंट, क्विज़ और नोट्स शेयर करके छात्रों की प्रगति मॉनिटर की जा सकती है।

प्रमुख विशेषताएँ

✅ ऑनलाइन क्लासरूम बनाने और प्रबंधित करने का आसान प्लेटफॉर्म।

✅ असाइनमेंट, क्विज़ और नोट्स शेयर करने की सुविधा।

✅ स्टूडेंट की प्रगति और परफॉर्मेंस मॉनिटरिंग।

✅ गूगल ड्राइव, डॉक, शीट्स, स्लाइड्स आदि के साथ इंटीग्रेशन।

✅ कहीं भी, कभी भी पढ़ाई करें – मोबाइल, टैबलेट या कंप्यूटर पर।

Google Classroom का उपयोग कैसे करें?

1.वेबसाइट या ऐप खोलें –

🌐 https://classroom.google.com

या गूगल प्ले स्टोर/एप्पल स्टोर से Google Classroom ऐप डाउनलोड करें।

2 लॉगिन करें –

👉 अपने Google अकाउंट (Gmail ID) से लॉगिन करें।

👉 शिक्षक और छात्र अलग-अलग रोल के साथ साइन इन कर सकते हैं।

क्लास बनाएं या जॉइन करें –

👩‍🏫 शिक्षक "Create Class" पर क्लिक करके नई क्लास बना सकते हैं।

👨‍🎓 छात्र "Join Class" पर क्लिक करके कोड डालकर क्लास में शामिल हो सकते हैं।

सामग्री साझा करें –

📄 असाइनमेंट, नोट्स, क्विज़ और अध्ययन सामग्री पोस्ट करें।

🎥 वीडियो, लिंक और अन्य संसाधन भी आसानी से शेयर किए जा सकते हैं।

असाइनमेंट सबमिट करें –

👉 छात्र ऑनलाइन असाइनमेंट हल करके सबमिट कर सकते हैं।

👉 शिक्षक उन्हें ग्रेड और फीडबैक दे सकते हैं।

प्रगति मॉनिटर करें –

📊 शिक्षक छात्रों की परफॉर्मेंस ट्रैक कर सकते हैं और रिपोर्ट जनरेट कर सकते हैं।

कभी भी, कहीं भी उपयोग करें –

💻 मोबाइल, टैबलेट और कंप्यूटर पर आसानी से एक्सेस करें।

Google Classroom ऐप डाउनलोड कैसे करें?

वेब प्लेटफॉर्म

Google Play Store

वेब प्लेटफॉर्म: https://classroom.google.com/

डिजिटल दुनिया

इं. शिवेंद्र प्रकाश सुमन

Khan Academy

Khan Academy

एक नि:शुल्क शैक्षिक प्लेटफॉर्म, जहाँ गणित, विज्ञान और अन्य विषयों के लिए वीडियो लेक्चर और प्रैक्टिस क्विज़ उपलब्ध हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

- ✅ गणित, विज्ञान, कंप्यूटर प्रोग्रामिंग, इतिहास, कला और अन्य विषयों के लिए मुफ्त वीडियो लेक्चर।
- ✅ प्रैक्टिस क्विज़ और इंटरएक्टिव एक्सरसाइज उपलब्ध।
- ✅ शिक्षक छात्रों की प्रगति ट्रैक कर सकते हैं।
- ✅ बहुभाषी सपोर्ट (कुछ सामग्री हिंदी में भी उपलब्ध)।

Khan Academy का उपयोग कैसे करें?

वेबसाइट पर जाएं – khan adacemy की आधिकारिक वेबसाइट खोलें।

नि:शुल्क पंजीकरण करें – ईमेल से अकाउंट बनाएं।

कोर्स खोजें – अपनी रुचि और विषय के अनुसार।

शिक्षक अपने छात्रों की प्रगति मॉनिटर कर सकते हैं और असाइनमेंट दे सकते हैं।

Khan Academy ऐप डाउनलोड कैसे करें?

वेब प्लेटफॉर्म   Google Play Store

वेब प्लेटफॉर्म: https://www.khanacademy.org/

डिजिटल दुनिया

इं. शिवेंद्र प्रकाश सुमन

WAYGROUND
formerly Quizizz

Quizizz

गेम-बेस्ड लर्निंग प्लेटफॉर्म, जहाँ शिक्षक मज़ेदार क्विज़ बनाकर छात्रों की भागीदारी और सीखने की रुचि बढ़ा सकते हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

- ✅ इंटरएक्टिव क्विज़ और गेम-बेस्ड लर्निंग प्लेटफॉर्म।
- ✅ शिक्षक खुद के क्विज़ बना सकते हैं या पहले से मौजूद क्विज़ का उपयोग कर सकते हैं।
- ✅ स्टूडेंट रियल-टाइम में क्विज़ खेल सकते हैं और तुरंत फीडबैक पा सकते हैं।
- ✅ मोबाइल, टैबलेट और कंप्यूटर पर आसानी से उपयोग योग्य।
- ✅ भाषा विकल्प – हिंदी और अंग्रेजी में कोर्स उपलब्ध।

Quizizz का उपयोग कैसे करें?

1.वेबसाइट या ऐप खोलें –
🌐 https://quizizz.com
या गूगल प्ले स्टोर/एप्पल स्टोर से Quizizz ऐप डाउनलोड करें।
2. साइन अप करें –
👉 शिक्षक और छात्र Google या ईमेल आईडी से अकाउंट बना सकते हैं।
👉 शिक्षक को "Teacher" और छात्र को "Student" के रूप में साइन अप करना होता है।
3. क्विज़ खोजें या बनाएं –
🔍 पहले से मौजूद हजारों क्विज़ में से अपनी कक्षा के अनुसार क्विज़ चुनें।
✍️ शिक्षक स्वयं भी नया क्विज़ तैयार कर सकते हैं।
4.गेम कोड शेयर करें –
🎮 शिक्षक क्विज़ का Game Code छात्रों के साथ शेयर करते हैं।
👨‍🎓 छात्र इस कोड के माध्यम से क्विज़ जॉइन करते हैं।
5. क्विज़ खेलें और सीखें –
🏆 छात्र मजेदार गेम की तरह प्रश्न हल करते हैं और तुरंत स्कोर एवं रैंक देख सकते हैं।
6. रिपोर्ट देखें –
📊 शिक्षक प्रत्येक छात्र के उत्तर और प्रदर्शन की विस्तृत रिपोर्ट देख सकते हैं।
7. कभी भी, कहीं भी उपयोग करें –
✅ Quizizz मोबाइल, टैबलेट और कंप्यूटर पर आसानी से काम करता है।

Quizizz ऐप डाउनलोड कैसे करें?

वेब प्लेटफॉर्म

Google Play Store

वेब प्लेटफॉर्म: https://wayground.com

मंजूषा चित्रकला

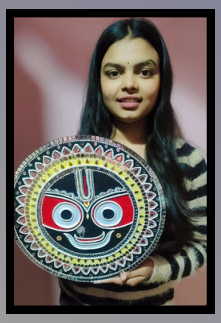

शृद्धा झा
अररिया

मंजूषा चित्रकला बिहार राज्य के अंग प्रदेश विशेषकर भागलपुर जिले की एक पारंपरिक लोककला है। यह चित्रकला धार्मिक कथाओं और लोक परंपराओं से जुड़ी हुई है, जिसका गहरा संबंध बिहुला बिषहरी की कथा से है। | मंजूषा शब्द का अर्थ होता है "पेटी" या डब्बा जिसमें ये चित्र बनाए जाते है। यह कला लेहरेनिया चित्रकला के नाम से भी जानी जाती है।

इतिहास और उत्तपत्ति

मंजूषा चित्रकला की शुरुआत धार्मिक अनुष्ठानों से मानी जाती है। यह कला खासकर नाग पंचमी के अवसर पर बनाई जाती थी। इस चित्रकला के जरिए लोग बिषहरी देवी की पूजा करते थे, जो नागों की देती मानी जाती है। यह चित्र लोकगाथा बिहला और लक्ष्मिंदर की प्रेम और भक्ति की कहानी को दर्शाता है। माना जाता है कि यह कला सातवी से नौवीं शताब्दी के बीच अस्तित्व में में आई, आई, लेकिन इसका: मौरिखक और लोक परंपरा में स्थान इससे मी पहले से रहा है।

विशेषताएँ

चित्रों का प्रारूप:
मंजूषा चित्रों में सारा दृश्य एक बॉर्डर के अंदर चित्रित होता है, जिसे लेहरेनिया बॉर्डर कहा जाता है।

रंगों का उपयोग :

इस चित्रकला में परंपरागत तीन रगों का उपयोग होता है - लाल हरा पीला।" रंग प्राकृतिक साधनों से बनाए जाते थे।
इस कला में देवी बिषट मुख्य पात्र:
बिषहरी, बिहुला, झांप, नाव, सूरज चौद, कछुआ, मछली आदि का चित्रण होता है। हरे चित्र कथा से जूज होता है।
शैली और रूपांकन :
चित्रों में इसानों की आंखें बहुत बड़ी और खुली है। आकृतियाँ लयबद्ध और प्रतीकात्मक होती है होती हैं।
सांस्कृतिक महत्व
मंजूषा चित्र कला केवल कला नहीं है। यह अंग पदेश की सांस्कृतिक पहचान है। है। यह लोककथाओं धार्मिक विर विश्वासों और परंपराओं को जीवित इखने का माध्यम है।
वर्तमान स्थितिः
आजकल यह लोककला पुनजीवित हो रही है। कई कलाकार और अंस्थाएं इस कला को नए माध्यमों जैसे कपडे, वॉल पेंटिंग स्टेशनरी और डेकोट आइटम्स का प्रयोग कर रहे है। सरकार भी हस्तशिल्प मेलों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यमा से इसे बढ़ावा दे रही है।

मंजूरखा चित्रकला न केवल हमारी सांस्कृतिक हधरोहर है, बल्क बल्कि यह हमारी लोकगाथाओं को जीवांत रखने वाली एक रंगीन और प्रभावशाली अभिव्यकि है। इसका संरक्षण और प्रचार आवश्यक है ताकि आने वाली पीदिया भी इसकी सुंदरता और परंपरा को समझ सकें।

प्रज्ञानिका आलेख

बच्चों के प्रति और अधिक संवेदनशील होने की है आवश्यकता

विप्लव कुमार, विशिष्ट शिक्षक
मध्य विद्यालय अरिहाना
आजमनगर, कटिहार

शिक्षक और अभिभावक में हो ताल मेल, तब बनता है बच्चों का अच्छा भविष्य

बच्चों की पढ़ाई और जीवन सँवारने में सबसे बड़ा योगदान माता-पिता और शिक्षक दोनों का होता है। स्कूल में शिक्षक बच्चों को पढ़ाते हैं, समझाते हैं और आगे बढ़ने की राह दिखाते हैं। लेकिन स्कूल के बाहर, घर में – अभिभावकों की जिम्मेदारी सबसे बड़ी होती है।

हम देखते हैं कि कई बच्चे बिना नाश्ता किए स्कूल आते हैं। भूखे पेट उनका मन पढ़ाई में नहीं लगता। कुछ बच्चे बहुत कमजोर या सुस्त दिखाई देते हैं, क्योंकि पेट खाली होता है। अभिभावकों से निवेदन है कि वे बच्चों को स्कूल भेजने से पहले थोड़ा नाश्ता जरूर दें – चाहे चाय और बासी रोटी हीं क्यों न हो।प्रत्येक दिन चेतना सत्र में एक न एक बच्चा बेहोश होकर गिर जाता है।इसमें संख्या ज्यादा लड़कियों की होती है।जिन्हें ज्यादा पोषण की जरूरत है।

कई बच्चे गंदे या फटे कपड़े पहनकर आते हैं। उनकी ड्रेस में बटन टूटे होते हैं या कपड़े मैले रहते हैं और पैर में चप्पल भी नहीं।इससे उनका आत्मविश्वास कम होता है और वे खुद को दूसरों से कम समझते हैं। स्कूल ड्रेस सिर्फ कपड़ा नहीं, अनुशासन और सम्मान की पहचान है। माता-पिता से विनती है कि बच्चों की ड्रेस साफ रखें और समय पर साफ करें।

साथ ही, यह भी ध्यान देना जरूरी है कि बच्चा घर आकर पढ़ाई करता है या नहीं। वह किन दोस्तों के साथ समय बिताता है? मोबाइल और टीवी में कितना समय दे रहा है? ये सब बातें बच्चे के भविष्य को तय करती हैं।

जब शिक्षक और माता-पिता मिलकर बच्चे को सही दिशा देते हैं, तभी बच्चा आत्मविश्वासी, समझदार और संस्कारी बनता है।आइए, हम सब मिलकर ऐसा शैक्षणिक माहौल बनाएं जहाँ हर बच्चा भरा पेट, साफ कपड़े और उत्साह के साथ स्कूल आए।

सुभाष चन्द्र बोष

एक दिन सुभाष को अपने दोस्त का टेलीग्राम मिला, 'बधाई हो, आज का मॉर्निंग पोस्ट देखो।' सुभाष ने 'मॉर्निंग पोस्ट' देखा तो पता चला कि सिविल सेवा परीक्षा में वे चौथे स्थान पर थे। देखते-देखते उनके पास बधाइयां भी पहुंचने लगीं। उन्होंने अपने भाई शरत को जवाबी पत्र में लिखा, 'मेरे पास आईसीएस की परीक्षा में सफलता को लेकर बधाइयों का तांता लगा हुआ है, लेकिन मेरे मन में सरकारी नौकरी करने को लेकर कोई खुशी नहीं है। अगर मैंने इस नौकरी के लिए हामी भरी भी, तो यह एक मन मारकर किया जाने वाला कार्य ही होगा।'

उन्होंने आगे लिखा, 'बेशक ऐसा करने पर जिंदगी भर के लिए एक मोटी तनख्वाह और फिर अच्छी खासी पेंशन का इंतजाम हो जाएगा और अगर कहीं मैं खुद को हद दर्जे का निष्ठावान साबित करने में कामयाब रहा, तो मेरे कमिश्नर बन जाने की भी पूरी-पूरी संभावनाएं होंगी। लेकिन क्या यही सब करते-करते अपनी जिंदगी तमाम कर लेना बुद्धिमानी होगी? इस सर्विस को अपनाने के बाद इंसान को जीवन में किसी भी तरह का जोखिम नहीं लेना होता है, लेकिन मैं क्या करूं? मेरे जैसे 'उल्टी' बुद्धि वाले व्यक्ति के लिए 'न्यूनतम प्रतिरोध' वाला मार्ग सबसे अधिक दुखदाई मालूम पड़ता है।'

सुभाष ने लिखा, 'अगर जीवन में संघर्ष न हो, कोई जोखिम न हो, तो जीने में खाक मजा आएगा?' अपनी प्रकृति को देखते हुए मुझे संदेह है कि मैं सिविल सर्विस के लिए एक उपयुक्त उम्मीदवार साबित हो सकूंगा। मुझे लगता है कि जो थोड़ी बहुत प्रतिभा मेरे पास है, उसे किसी और काम में लगाकर मैं ज्यादा भला कर सकता हूं।' सुभाष ने इस पत्र से आईसीएस सेवा जॉइन न करने की इच्छा भाई को बता दी थी। वह अंग्रेजी शासन के तहत काम करने वालों में से नहीं, बल्कि स्वेच्छा से मातृभूमि की स्वतंत्रता की खातिर सर्वस्व समर्पण करने वालों में से थे।

बिहार में सरकारी विद्यालयों के डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने के लिए टीचर्स ऑफ बिहार ने 'प्रोजेक्ट शिक्षक साथी' की शुरुआत की है। इस महत्वाकांक्षी योजना के तहत राज्य के सभी सरकारी विद्यालयों को डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़ा जाएगा, जिससे शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता, पारदर्शिता और संवाद में व्यापक सुधार होगा।

मुकेश गुप्ता
शिक्षक
राज0 प्रा0वि0
सरमसपुर
प्रखंड-काँटी,
जिला-
मुजफ्फरपुर

सांसें हो रही है कम, आओ पेड़ लगाए हम

आओ मिलकर करें विचार
पेड़-पौधे क्यों है जरूरी
यह जीवों को सांसें देती
वृक्ष बादल रोककर वर्षा है कराती
जिससे जीवों को मिलता नया जीवन
गर्मी, जाड़ा, बाढ़ और सुखाड़ से हमें बचाती
फल-फूल, लकड़ी, जड़ी-बूटी और भोजन देते
जलवायु परिवर्तन, अनावृष्टि, अतिवृष्टि
का कारण है पेड़ों की कटाई
अगर हमें रहना है जीवित और खुशहाल
करना होगा पौधारोपण और संरक्षण
स्कूलों, कॉलेजों में हो पौधारोपण अभियान
सार्वजनिक स्थलों पर हो पौधारोपण
शादी समारोह, जन्मदिन और सालगिरह पर हो
पौधारोपण और पौधादान कि परम्परा
पेड़ है तो हम है समझना होगा हमें
तभी होगी हमारी धरती हरी-भरी एवं खुशहाल।

पराक्रम दिवस

चंदना दत्त,
रांटी मधुबनी

वीर सुभाष चन्द्र हमारे
भारत मां के सच्चे लाल
सारे जग में नाम है उनका
पराक्रमी भारत के लाल
अंग्रेजों को धूल चटा दी
दिखा दिया पौरुष अपना
मां भारती हों स्वाधीन
यही था उनका स्वप्न
तुम मुझे खून दो
मैं तुम्हें आजादी दूंगा
सीधा सच्चा प्रण था उनका
अद्भुत सा पराक्रम था उनका

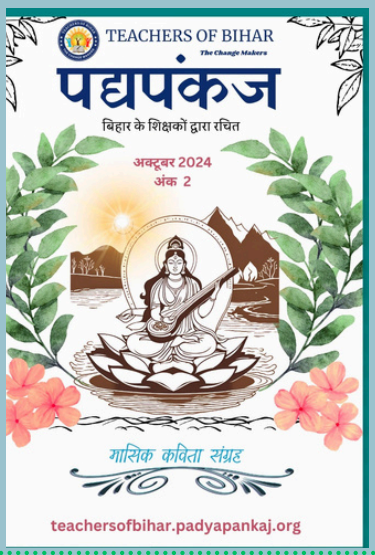

टीचर्स ऑफ बिहार की एक बेहतरीन प्रस्तुति पद्य पंकज। जिसमे आप सभी शिक्षक अपने मन की मोतियों को पिरोकर साहित्यिक माला स्वयं निर्मित कर सकतें हैं। जरूर पढ़िए पद्य पंकज शिक्षकों की एक से बढ़ कर एक रचनाएँ।

अंजू कुमारी, मध्य विद्यालय गंगवारा, रून्नीसैदपुर, सीतामढी

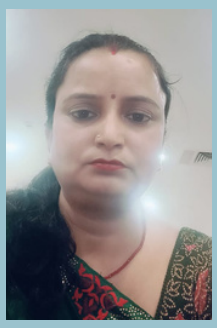

शिक्षक क्या है?
ज्ञान का दीपक जलाने वाला,
तीसरी आँख का दाता,
सही दिशा दिखाने वाला।
बच्चे उसे लेकर चलते,
जीवन का लक्ष्य खोजते,
क्या करना, क्या सोचना,
संस्कारों की मूरत गढ़ते।
सही शब्दों का प्रयोग करें,
दुःख किसी को ना पहुँचे,
समाज को ऊँचाइयों पर ले जाएँ,
अच्छाई की नींव रखें।
नेता बने, डॉक्टर बने,
देश के सच्चे सेवक बने,
सही क्या, गलत क्या,
व्यवहार से उदाहरण बने।
ये सब देखकर गर्वित होते,
शिक्षक मुस्कुराकर कहते,
"मेरे ज्ञान के दीप जले,
हर पथ प्रकाशमान करें।"
देवी-देवता की पूजा होती,
शंकर की आराधना होती,
पर समाज का सच्चा मान,
शिक्षक को मिलता अधिक सम्मान।

जय शिक्षक! जय शिक्षक!

बेटी अभिशाप नहीं वरदान है

पूजा कुमारी, शिक्षिका, प्राथमिक विद्यालय प्रखंड उपनिवेश मुरलीगंज (मधेपुरा)

जाने क्यों लोग बेटी को बोझ समझते हैं। बेटी कोई अभिशाप नहीं यह तो आंगन की लक्ष्मी है॥

किसी के घर खुशहाली बनकर तो किसी के घर लक्ष्मी बनकर आती है यह बिटिया प्यारी।
जिसके घर बेटी ना हो उसके घर बन जाती है रानी॥

क्या घर वाले और क्या दुनिया वाले सभी देते हैं सम्मान।
पूजनीय बन जाती है वे देवी के समान॥

बेटी, बहन, बहू और मां बनकर।
रहती सदा सहनशील बनकर॥

कहते हैं लोग बेटी है अभिशाप।
वरन् अभिशाप नहीं है, वरदान॥

जो लोग या जाते हैं बेटी के कुमकुम कदम।
वो लोग होते हैं, जगत में भाग्यशाली॥

मिलती उसे जिंदगी की सौगात।
बेटी अभिशाप नहीं वरदान है॥

राम किशोर पाठक
प्रधान शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, पटना

नयी शिक्षा नीति

शिक्षा का अधिकार सभी को,
सहज सुलभ से मिल पाए।
अब खाना पूर्ति न हो केवल,
कौशल भी अपना विकसाए॥
उम्र सापेक्ष शिक्षण उत्तम,
सबके मन को हम हर्षाए।
यही संकल्प साथ लिए हम,
नयी नीति शिक्षा की लाए॥
बीस-बीस उनतीस जुलाई,
इसका प्रादुर्भाव हुआ है।
अब बजट बढ़ाकर शिक्षा को,
रोजगारोन्मुख बनाया है॥
तीन साल से वर्ष अठारह,
चार चरण में इसको लाया।
छात्र संग शिक्षक का जिसने,
गुणवत्ता की बात बताया॥
प्रारंभिक सीख मातृभाषा,
नवाचार कहता अपनाओ।
नये पंख शिक्षा की लेकर,
उड़ने की हर कला सिखाओ॥
कस्तूरीरंगन का कहना,
भारत को है विकसित बनना।
सताईस अध्यायों को यह,
चार भाग में वर्णन करना॥
पाँच वर्ष है बुनियादी के,
तीन तैयार है करवाता।
तीन साल फिर मध्यम रहकर,
चार वर्ष उड़ान भरवाता॥
व्यवसायिक शिक्षा का पोषण,
समावेशी अधिक हो जाए।
बोझिल कभी न लगे पढ़ाई,
रुचिकर सबको यह लग पाए॥
शिक्षक प्रशिक्षण अंग इसका,
तकनीक का प्रयोग सुलभ हो।
सपनों को साकार सहज हम,
करने का हर मार्ग सुलभ हो॥

गुरु पूर्णिमा

पावन दिन है आज का ,जन्म लिए ऋषि व्यास।
तीन लोक नौ खंड में ,मानो हुआ उजास॥

वेदों ,की रचना किये ,लिखे जगत का सार।
कहती श्रीमद्भागवत , गुरु हैं अगम अपार॥

हरि लाते हैं जीव को , जन्म मरण के द्वार।
गुरु अनुकंपा एक दिन , करते हैं भवपार॥

गुरु सुमिरन कर रे मना , गुरु हीं का ले नाम।
हर विपदा में सुन सदा , गुरु आयेंगे काम॥

गुरु हैं देवों से बड़े ,वेद कहे ये जान।
इधर उधर को छोड़कर , कहना गुरु की मान॥

पावन है गुरु पूर्णिमा , उत्तम मास अषाढ़।
गुरु चरणों में भक्त का , उपजें प्रेम प्रगाढ़॥

मनु कर नित गुरु वंदना , गुरु ही ज्ञान प्रमाण।
गुरु कृपा से एक दिन , होगा सुन कल्याण॥

स्वरचित एवं मौलिक
मनु कुमारी, विशिष्ट शिक्षिका, प्राथमिक विद्यालय दीपनगर, बिचारी, राघोपुर सुपौल ,बिहार

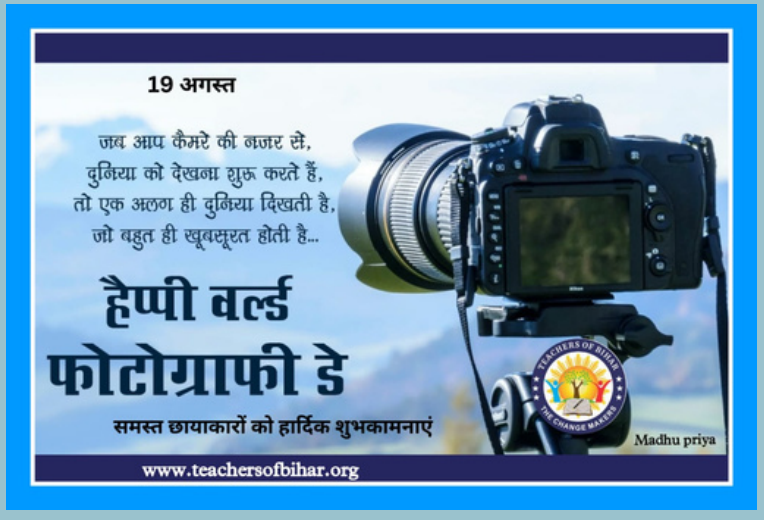

मुझे और चढ़ना है गगन में

सपनों की ऊँचाई छूने को,
हौसलों का दीप जलाने को,
अभी कहाँ ठहरना है पथ में?
अभी सफर अधूरा है मन में,
मुझे और चढ़ना है गगन में।
नहीं डरूंगा आँधियों से मैं,
न ही झुकूंगा बाधाओं से,
मुश्किल जो भी आएगी राह में,
हर मुश्किल को जीत लूँगा,
मुझे और चढ़ना है गगन में।

सपनों की ऊँचाई तक जाने में,
अगर गिरूँ फिर उठूँगा,
हर ठोकर से निखरूँगा।
नई कहानी कह जाउँगा,
आसमान भी झुककर मुझसे मान करेगी।
मुझे और चढ़ना है गगन में।

जब तक साँसें थक न जाये,
उड़ान मेरी निरंतर होगी,
हौसलों की लौ जलाकर,
मैं अपनी मंज़िल पा जाऊँगा।
मुझे और चढ़ना है गगन में।

गौतम कुमार
मध्य विद्यालय भरसो,
खगड़िया, बिहार

तेरा पिता हूँ मैं
तेरी गहरी से गहरी
विपत्तियों की थाह हूँ मैं
ज़िन्दगी की भाग-दौड़ में
कठिनाईयों के किसी मोड़ में
जब तुम निराशापूर्ण धुप से कुम्हला जाओ
तो बेझिझक मेरे पास आना
तेरे लिए सदैव स्नेह भरा
पीपल सी शीतल छाँह हूँ मैं
क्योंकि तेरा पिता हूँ मैं ।
खुली आँख से तुम सपना देखो
मुसीबतों के आगे माथा मत टेको
चाहे जितना भी कठिन हो राहें
तुम निर्भय होकर बढ़ते जाओ
ठोकर लगे तो भी मत घबराना
तेरे हर जख्म का मरहम ,तेरी मर्ज का दवा हूँ मैं
क्योंकि तेरा पिता हूँ मैं ।
इच्छाएँ अनंत है...
जीवन की राहों में
कहीं पतझड़ तो कहीं बसंत है
खुले गगन में स्वछंद होकर विचरण करो तुम
पर याद रहे -
हमेशा मर्यादापुर्ण आचरण करो तुम
तेरे बनते बिगड़ते भविष्य की परवाह हूँ मैं
क्योंकि तेरा पिता हूँ मैं ।
ध्यान रहे -
असफलता से कभी निराश मत होना
आ जाये बीच में कोई अड़चन
तो हताश मत होना
तू सोच मत, बस बढ़ता जा
तुझे हर मंज़िल तक पहुँचाने वाला
सरल सुगम राह हूँ मैं
क्योंकि तेरा पिता हूँ मैं।

बिनोद कुमार
मनिहारी,कटिहार

मृत्युंजय कुमार
नवसृजित
प्राथमिक
विद्यालय
खुटौना यादव
टोला
पताही,पूर्वी
चंपारण

करें योग रहे निरोग

आओ हम सब योग करें,
जीवन को नीरोग करें।

सुबह सवेरे उठकर जो करते हैं योग,
बिमारी दूर भागती है और वो सदा रहते हैं नीरोग।

स्वस्थ जीवन जीना है तो रोज योग अपनाएँ,
रोज योग अपनाकर जीवन रोगमुक्त पाएँ।

शरीर को रोगमुक्त बनाना है,
जीवन में नित्य योग को अपनाना है।

आओ हम सब योग अपनाएँ,
स्वस्थ शरीर के साथ जीवन धन्य बनाएँ।

जीवन में जो योग अपनाता है,
अपने आस-पास से बीमारी दूर भगाता है।

योग के आगे सब है फेल,
डॉक्टर हो या वैद्य किसी का नही है कोई मेल।

स्वस्थ और फुर्तीला शरीर पाना है,
तो जीवन में सदा योग अपनाना है।

आईए हम सब मिलकर योग दिवस पर संकल्प लें,
खुद योग अपनाएं और दूसरों को भी विकल्प दें।

मो.सरफराज
आलम
मध्य विद्यालय
रामनगर केनगर
जिला पूर्णिया
बिहार

घंटी बजी तो उड़ चली वो

घंटी बजी तो उड़ चली वो, बाँध के सपनों की चोटी
स्लेट किताबें थाम के निकली, पायल जैसी प्यारी बेटी

धूप में छांव सी लगती है, ज्ञान की अगवानी करती
कंधे पर बस्ता लहराए, उजियाली आंखों में भरती

हर सवाल को थामे चलती, हर उत्तर की खोज बने
नन्हे नन्हे पांवों वाली, जीवन की आवाज बने

कभी बने वो चांद सी चुप, कभी सूरज सी कहती बात
हर एक किताब की पंक्ति में, खोजे अपने नए जज्बात

घंटी बजी तो सोच चली वो, उड़ान बनी, उम्मीदें नवेली
कक्षा की हर दीवारों पर, छू आई स्याही की रेखाएं खेली

बेटी है वो दीप सरीखी, बुझती नहीं आंधी पानी में
पढ़ लिख कर वो रोशन होगी, अपने ही अरमानों की रानी में

घंटी बजी तो उड़ चली वो, बाँध के सपनों की चोटी
स्लेट किताबें थाम के निकली, पायल जैसी प्यारी बेटी।

नेकदिल राजा

कंचन प्रभा (शिक्षिका)
मध्य विद्यालय गौसाघाट, दरभंगा

एक गाँव में किशन नाम का एक लकड़हारा अपनी पत्नी के साथ रहता था। वह बहुत ही गरीब था। वह एक छोटी सी झोंपड़ी बना कर रहता था। वो इतना गरीब था कि झोंपड़ी में एक चटाई, एक मिट्टी का दीया, दो थाली और एक लोटा के अलावे कुछ भी नहीं था। उसकी पत्नी एक दो घर में बर्तन मांजती थी और किशन रोज सुबह जंगल में जा कर लकड़ी काटता फिर लकड़ियों को बाजार में बेचता और उससे जो पैसे मिलते उससे चुड़ा गुड़ इत्यादि ले कर घर आता और दोनों मिल कर भोजन करते इसी प्रकार उसकी रोजी रोटी चल रही थी।

एक रात दोनों चुड़ा गुड़ खा कर सोने की तैयारी कर ही रहे थे कि बाहर से किसी ने आवाज लगाई - "कोई है"

किशन झोंपड़ी से बाहर जा कर देखा तो एक बूढ़ा व्यक्ति कम्बल ओढ़े खड़ा था। उसकी लम्बी दाढ़ी थी आंखें सूजी हुई। पैरों में मिट्टी सना हुआ। हाथों में लाठी थी।

किशन उसे देख कर पुछा--आप कौन है?

उस बूढ़े व्यक्ति ने कहा-- मेरा नाम मंगल है। मैं एक भिखारी हूँ। तीन दिनों से कुछ भी नहीं खाया है और ना पानी की एक भी बूँद मेरे मुख में गयी है। यहाँ से गुजर रहा था तो बड़ी थकान सी हुई और आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हो रही इसलिये मैंने आपको आवाज दी। क्या आप मुझे आज की रात अपने घर में शरण देंगे?

सुन कर किशन बोला-- हाँ हाँ क्यों नहीं अतिथि हमारे लिये भगवान होते हैं। आइये आइये अंदर आइये।

और किशन उस भिखारी को अंदर ले आया और पत्नी से पानी लाने को कहा।

पानी पीते ही जैसे उस भिखारी को जान में जान आ गई। फिर किशन की पत्नी ने कुछ चुड़ा और गुड़ ला कर उन्हें खाने को दिया। किशन अपने गमछे से उसे हवा देता रहा। खाने के बीच दोनों बाते कर रहे थे। भिखारी ने किशन की गरीबी की कहानी सुन कर बेहद भावुक हो गया और बोला-- आप जैसे अच्छे इंसान की भगवान क्यों नहीं सुनता? आप यहाँ के राजा से क्यों ना मदद लेते हैं। वो बहुत अच्छे है सुना है वो अपनी जनता का बहुत ख्याल रखते हैं।

किशन उसकी बाते सुन कर बोला-- राजा के दरबार में जाना आसान नहीं होता। हम जैसे लोगों को अंदर जाने कि अनुमति नहीं मिलती। सैनिक हमें बाहर से ही लौटा देंगे।

सुन कर भिखारी बोला - आप राजमहल जायें और राजमहल के बाहर जो सैनिक होगा उसे मेरा नाम बोलियेगा वो आपको अंदर जाने देगा। फिर आप राजा से अपनी समस्या बोल कर मदद मांग लीजियेगा।

किशन को उसकी बातें सुन कर आश्चर्य हुआ। जब इनकी इतनी पहचान बनी हुई है तो ये खुद क्यों नहीं राजा से मदद ले रहे? मन के दुविधा को दूर करने के लिये वो आखिर ये बात मंगल से पुछ ही लिया।
मंगल उसकी बाते सुन कर मुस्काया
" मैं किसके लिये काम करूँ? मेरा दुनिया में कोई नहीं। घूमते फिरते कोई दो रोटी दे देता है बस और मुझे क्या चाहिये और अब तो मेरे एक पैर कब्र में है। आपकी तो पत्नी है। पूरा जीवन बचा हुआ है।
किशन ने कहा-- ठीक है मैं कल ही राजमहल जाता हूँ।
बातचीत करते करते दोनों सो गये।
सुबह किशन की नींद खुली तो देखा भिखारी जा चुका था।
फिर नित्य क्रिया करके वो राजमहल की ओर चल दिया।
राजमहल के मुख्य द्वार पर खड़े सैनिक से किशन बोला-- नमस्कार मेरा नाम किशन है। मुझे मंगल ने भेजा है।
सुन कर सैनिक उसे वहाँ रुकने को कह कर अंदर चला गया। थोड़ी देर बाद वो वापस आ कर बोला-- जाइये आपको महाराज ने बुलाया है।
फिर एक दुसरा सैनिक किशन को दरबार तक ले कर गया।
दरबार में आ कर किशन ने महाराज को प्रणाम किया।
राजा ने कहा-- आओ किशन मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था।
'मेरा इन्तजार? ' आश्चर्य से किशन बोला।
राजा--हाँ मुझे तुम्हारा कर्ज चुकाना है ना
किशन--मेरा कर्ज?
राजा-- हाँ हाँ मैंने जो तुम्हारे घर भोजन किया पानी पिया और आराम किया था उसका कर्ज चुकाना है।
क्या? कल जो बुजुर्ग मेरे घर आये थे वो आप थे? किशन आश्चर्यचकित हुआ।
हाँ भई हाँ वो मैं ही था। मैं अपने जनता का हाल चाल जानने खुद ही रात को वेश बदल कर निकला करता हूँ और रोज किसी एक परिवार के दुख दूर करने की कोशिश करता हूँ।
मैं चाहता हूँ कि मेरे राज्य की जनता खुशहाल रहे। कोई भूखा ना सोये। कोई भीख ना मांगे।
राजा ने किशन को बताया।
किशन के मुख से अनायास ही निकल गया--- महाराज की जय हो महाराज की जय हो।
राजा ने किशन को अपना दरबारी बना लिया साथ ही उसकी पत्नी को भी राजमहल के रसोई में काम मिल गया।
अब खुशी खुशी किशन का परिवार चलने लगा ।

'दादी माँ की सीख'

गर्मी की छुट्टी में इस बार भी सभी बच्चे अपने गाँव आये थे। अनु, तनु, मंगल, सोनू, सबके सब। अपने गाँव, अपनी दादी माँ के गाँव।

मजे की बात। गाँव का नाम था बसन्तपुर। और दादी माँ का नाम बसन्ती। बसन्ती देवी।

यह गाँव भी प्यारा-सा। दादी भी प्यारी-सी। सबको प्यार करने वाली। सबकी दुलारी। सभी बच्चे उन्हें हमेशा घेरे रहते थे।

बच्चे शरारती भी कम न थे। खेल-खेल में एक-दूसरे से भिड़ जाते। कभी-कभी झगड़े, मारपीट तक की नौबत हो जाती थी।

आज सुबह से ही बच्चों ने शोर मचा रखा था। कभी छत पर, कभी बरामदे में, कभी बगीचे में उछल-कूद मचा रहे थे।

तभी मंगल ने तनु को धकेल दिया। उधर अनु और सोनू आपस में तू-तू, मैं-मैं कर रहे थे।

'अरे, देखो, दादी माँ आ रही है। आज मैं सभी की शिकायत करूँगी। दादी सभी को डाँटेगी। सभी को मारेगी!' बातूनी तनु की बात झूठी न थी। दादी माँ सचमुच आँगन से निकलकर बच्चों की तरफ आ रही थी।

पहले तो सभी बच्चे सहम गए। फिर सभी ने एक-दूसरे की गलती गिनानी शुरू कर दी। मगर दादी ने किसी को कुछ न कहा। न डाँट लगाई। न फटकार।

'देखो, मैं तुम सबको अच्छी लगती हूँ न!'
'हाँ... दादी माँ!' सभी ने एक साथ कहा।

'वह इसलिए बच्चों, कि मैं तुम सभी से प्यार करती हूँ। किसी का दिल नहीं दुखाती। न कुछ ऐसा करना चाहती हूँ कि मेरे व्यवहार से किसी को पीड़ा पहुँचे... समझ रहे हो न मेरी बात?'
'हाँ...' सभी ने सिर हिलाया।

'तो मेरे बच्चे! यही तो असली की पढ़ाई है। अच्छे बनो। नेक बनो। सभी से प्यार करो। सबके प्यारे बनो। ...'

फिर दादी माँ ने सभी को प्यार से अपने साथ बिठाया और अच्छी-अच्छी चीजें खाने के लिए दीं।

सभी खुश थे। कोई फल खा रहा था। कोई आलू के चिप्स और मंगल तो रेवड़ी पीने में मगन था!

बच्चों के खुशियों की कोई सीमा न थी। वह सचमुच दादी माँ की बात को समझने लगे थे।

गिरिधर कुमार
उमवि जियामारी, अमदाबाद, कटिहार

लावा(पश्चिम बंगाल)

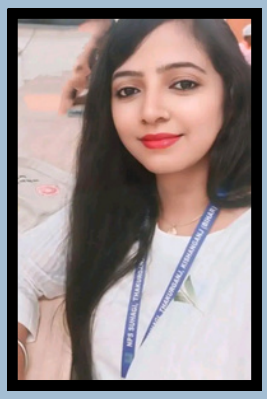

निधि चौधरी
P.S.BIRNABARI

मित्रों! अगर आप शहर की गर्मी से परेशान हैं, गाड़ियों के हॉर्न ने आपके कानों में दम कर रखा है, और आप बिल्कुल थके - थके महसूस कर रहे हैं, तो चलिए पश्चिम बंगाल के एक सुंदर से छोटे से शहर लावा में जहां आपको मिलेंगे प्राकृतिक झरने और ध्वनियों में केवल पशु पक्षियों की आवाज़ें। चित्त को शांत कर देने वाली ठंडी हवाएं और यहां का तापमान जो कि दार्जिलिंग से भी कम है। अगर आप रोमांस पसंद करते हैं तो आप लावा की यात्रा के दौरान कैंपिंग भी कर सकते हैं। जिससे आप प्रकृति के और करीब आए पाएंगे। गुम्बा दारा से समथर तक ट्रैकिंग कर सकते हैं जो लावा के बिल्कुल करीब है। एक बेहद दिलचस्प बात यह कि यहां के बाज़ार में अधिकतर दुकानें सिवान और सारण जिले के लोगों का है। तो आप आराम से हिंदी के अलावे भोजपुरी में भी अधिकांश लोगों से बतिया सकते हैं।

यात्रा वृतांत में आज मैं आप सबको लेकर चलती हूँ, पश्चिम बंगाल के लावा पर्यटन स्थल पर। हालांकि लोग अधिकतर दार्जिलिंग और सिक्किम के बारे में ही जानते हैं लेकिन मैं आज आप लोगों को यात्रा वृत्तांत में लेकर चल रही हूँ "लावा" जहाँ जाकर आपको मिलेगा बेहद सुकून। इस स्थान पर जाते ही ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति ने इसे अपने हाथों से सजाया हो। प्रदूषण शून्य, चारों तरफ हरियाली और ठंड का एहसास ऐसा वातावरण जो आपको बिल्कुल आत्मा से तृप्त कर दे।

पश्चिम बंगाल में "लावा" पूर्वी हिमालय में बस एक छोटा सा बहुत सुंदर शहर है। यह दार्जिलिंग जिले के अलगराह के रास्ते कलिंगपोंग शहर से 34 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गर्मियों में यह शहर दार्जिलिंग से भी अधिक ठंडा रहता है। तो हम लोग निकल चुके हैं लावा की यात्रा पर।

सबसे पहले आपको आना होगा सिलीगुड़ी। सिलीगुड़ी में बस स्टैंड से ही आपको बस मिल जाएंगे और बस का किराया भी बहुत कम है यहां दो सौ से ढाई सौ के बीच में आपको आराम से बस मिल जाएंगे।

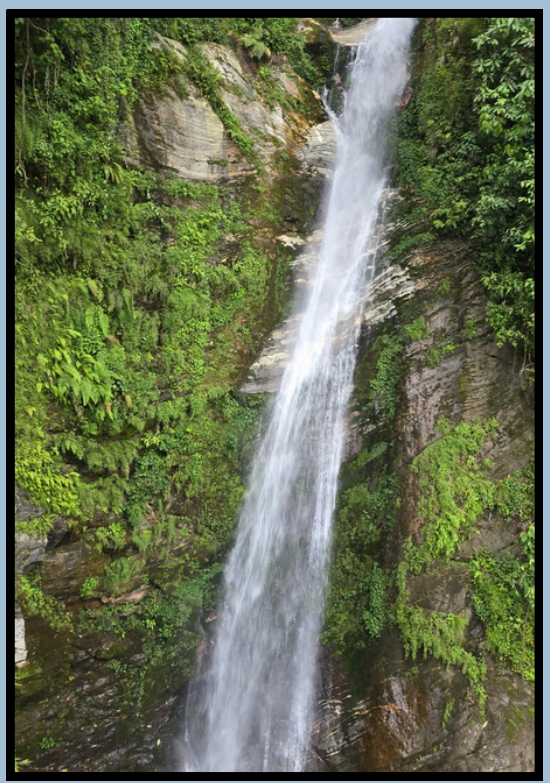

मात्र चार से पाँच घंटे के बीच में आप इस मनोरम पर्यटन स्थल तक पहुंच सकते हैं।

आपकी यात्रा शुरू होते ही मार्ग में आपको दिखेंगे शंकु धारी पेड़ों के घने जंगल। लावा के मार्ग में आपको उष्णकटिबंधीय पर्णपाती से लेकर देवदार और बर्च के गिले, अल्पाइन के पेड़ो तक का आकर्षण आपको मिल जाएगा देखने को। एक बेहद रोचक बात यह है कि यहां जो मार्केट है उसमें अधिकतर दुकानें बिहार के सिवान और सारण जिले के लोगों का है बहरहाल आप आराम से भोजपुरी में भी बतिया सकतें हैं।

उसके बाद यहां पर बेहद किफायती दरों में होटल भी उपलब्ध है आपको मात्र पन्द्रह सौ में यहां पर अच्छे होटल मिल जाते हैं। हालांकि मौसम के अनुसार दरों में परिवर्तन भी होता है। लावा पश्चिम बंगाल के उन कुछ स्थानों में से एक है जहां सर्दियों में बर्फबारी होती है। लावा प्रसिद्ध नेवरा वैली नेशनल पार्क का प्रवेश द्वार है और शंकु धारी पेड़ों के घने जंगल से गिरा हुआ है।

यहां आपको कई खूबसूरत मठ और मंदिरों को भी दर्शन होंगे और आसपास अधिकांश पर्यटक आकर्षण और दार्शनिक स्थलों की यात्रा भी कर सकते हैं। यह एक शांत पर्यटन स्थल है जहां आपको नेवर राष्ट्रीय उद्यान के वनस्पतियों और जीवों के बारे में जानने के लिए बहुत कुछ मिल सकता है और वहां पर जाने वाले पौधों और जानवरों की प्रकार के बारे में भी आप जानकारी प्राप्त कर सकते हैं इतना ही नहीं यहां आपको रास्ते में ही इतने प्रकार के फूल मिल जाएंगे कि आप गिनती भी भूल जाएंगे। एक से बढ़कर एक सुंदर फूलों से तराशा है प्रकृति ने लावा को। तो मित्रों आप भी अवश्य लावा घूमने जाएं।

लवली कुमारी class 7th M.S.
BHARRAHI BAZAR
MADHEPURA

बच्चों का कोना

Sohana Naz
+2 Project Girls High
School Tulsia Kishanganj

लक्ष्मीकुमारी class 7th M.S.
BHARRAHI BAZAR
MADHEPURA

Baalveer Kumar Class-5
Nps barmadia izmal
Block-chakia
Purvi champaran

रुमाल से चाभी रिंग बनाया
मध्य विद्यालय गौसाघाट दरभंगा
साधना
कक्षा 8

कुमारी class 6th M.S.
BHARRAHI BAZAR
MADHEPURA

Safiya Parween
Class 7
Project girls high school
Tulsia Kishanganj

UMS phulwariya Ghanghti
class -6 chakiya
Eastchamparn

बच्चों का कोना

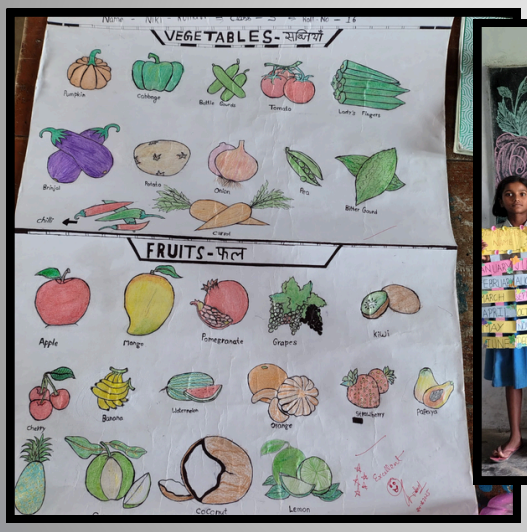

ToB प्रस्तुत करतें हैं बालमन्य यह पत्रिका बच्चों में रचनात्मक गुणों को निखारने में मदद करती है। यह पूर्णतः बच्चों की रचनाओं, पेंटिंग्स इत्यादी पर आधारित है।

स्वस्थ रहें मस्त रहें

मृत्युंजयम्, कटिहार

प्रारंभिक बाल विकास में योग की भूमिका

1. शारीरिक विकास:
मोटर कौशल: योग आसन बच्चों को स्थूल और सूक्ष्म मोटर कौशल विकसित करने में मदद करते हैं। संतुलन आसन समन्वय को बढ़ाते हैं, जबकि स्ट्रेचिंग और मजबूती देने वाले व्यायाम मांसपेशियों की टोन और लचीलापन बढ़ाते हैं।
शरीर जागरूकता: विभिन्न आसनों के अभ्यास से, बच्चे अपने शरीर और उसकी गति के बारे में बेहतर समझ प्राप्त करते हैं।
स्वास्थ्य और फिटनेस: नियमित योग अभ्यास शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा देता है, स्वस्थ वजन बनाए रखने में मदद करता है, और जीवन के शुरुआती दौर में स्वस्थ आदतों के विकास में सहायता करता है।

2. संज्ञानात्मक विकास:-

एकाग्रता और फोकस: योगाभ्यास से ध्यान अवधि और एकाग्रता में सुधार करते हैं, जो सीखने और शैक्षणिक सफलता के लिए आवश्यक कौशल हैं।
समस्या-समाधान:- योग खेलों और गतिविधियों में भाग लेने से रचनात्मक सोच और समस्या-समाधान क्षमताओं को बढ़ावा मिलता है।
स्मृति और सीखना:- योगाभ्यास स्मृति धारण और संज्ञानात्मक प्रसंस्करण को बढ़ाते हैं, जिससे समग्र सीखने में सहायता मिलती है।

3. सामाजिक-भावनात्मक विकास:-

योग बच्चों को श्वास क्रिया और ध्यान के माध्यम से अपनी भावनाओं को पहचानना और उनका प्रबंधन करना सिखाता है, जिससे बेहतर भावनात्मक विनियमन और लचीलापन प्राप्त होता है।
आत्म-सम्मान:- नए आसन और तकनीकों में निपुणता प्राप्त करने से आत्मविश्वास और उपलब्धि की भावना बढ़ती है।

प्रारंभिक बाल विकास में योग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह बच्चों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास में मदद करता है। योग बच्चों को स्वस्थ, खुश और आत्मविश्वासी बनाने में मदद करता है।

शिक्षा जगत की खबरें

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा से जुड़ी प्रमुख नीति एवं समाचार

1.एनसीईआरटी की नई किताबों में बड़ा बदलाव: मुगलों को हटाया, महाकुंभ जोड़ा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने कक्षा 7वीं की पाठ्यपुस्तकों में बड़ा बदलाव किया है। नए सिलेबस में अब छात्रों को मुगलों का इतिहास नहीं पढ़ाया जाएगा। इसकी जगह भारतीय संस्कृति और परंपराओं से जुड़े नए विषयों को शामिल किया गया है।

नई किताबों में "महाकुंभ", "भारत की बेटियां", "मेक इन इंडिया", "राज्यों पर केंद्रित अध्याय" जैसे नए विषय जोड़े गए हैं। इसके साथ ही छात्रों को अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के तहत पढ़ाया जाएगा।

2.यूजीसी ने दी बड़ी राहत: 2025 से पहले नियमों के तहत किए गए दो कोर्स भी होंगे मान्य।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों को बड़ी राहत देते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने दो शैक्षणिक कार्यक्रमों को साथ करने को लेकर अहम संशोधित गाइडलाइन जारी की है। अब यदि किसी छात्र ने वर्ष 2025 से पहले UGC के दिशा-निर्देशों के अनुरूप एक साथ दो कोर्स किए हैं, तो दोनों डिग्री को वैध माना जाएगा।

3.दुनिया में 27 करोड़ से अधिक बच्चे स्कूली शिक्षा से वंचित, शिक्षा संकट गहराया।

यूनिस्को की वैश्विक शिक्षा निगरानी टीम (जीईएमआर) की रिपोर्ट में एक चौंकाने वाला खुलासा हुआ है कि दुनिया भर में 27.2 करोड़ से ज्यादा बच्चे और किशोर स्कूली शिक्षा से बाहर हैं। यह संख्या वैश्विक शिक्षा के लिए एक गंभीर संकट की ओर संकेत करती है। रिपोर्ट के अनुसार, इनमें से बड़ी संख्या में बच्चे प्राथमिक, सितंबरियर और सीनियर सेकेंडरी स्तर की पढ़ाई से वंचित हैं।

4.अब बच्चों की पढ़ाई उनकी मातृभाषा में: अंग्रेजी पढ़ना अनिवार्य नहीं, जो भाषा समझें उसी में होगी शिक्षा।

नई शिक्षा नीति के तहत अब स्कूलों में छोटे बच्चों को उनकी मातृभाषा या समझी जाने वाली भाषा में पढ़ाई कराई जाएगी। सीबीएसई द्वारा स्कूलों को इस संबंध में निर्देश भेजा गया है, जिसमें कहा गया है कि अंग्रेजी भाषा में पढ़ाई अब अनिवार्य नहीं होगी।

शिक्षा जगत की खबरें

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

बिहार:- शिक्षा से जुड़ी प्रमुख खबरें

1.सरकारी स्कूलों के बच्चे भी सीखेंगे तैराकी, जल संरक्षण और जीवन रक्षा के लिए मिलेगा विशेष प्रशिक्षण

अब बिहार के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे तैराकी भी सीखेंगे। कक्षा 8 से 12 तक के छात्रों को तैराकी का विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा ताकि उन्हें न सिर्फ जीवन रक्षा कौशल मिल सके, बल्कि जल संरक्षण के महत्व को भी समझाया जा सके। यह प्रशिक्षण मुख्यमंत्री सुरक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत संचालित किया जाएगा।

2. बिहार में खत्म होंगे BEO के 534 पद, बीपीएससी से होगी नई नियुक्ति – पद का नाम होगा A.D.E.O

बिहार में अब शिक्षा विभाग के अधीनस्थ ब्लॉक शिक्षा पदाधिकारी (B.E.O.) पद को समाप्त कर दिया जाएगा। इन 534 पदों की जगह अब "एडिशनल डिस्ट्रिक्ट एजुकेशन ऑफिसर (A.D.E.O.)" नामक नए पद पर नियुक्ति की जाएगी। यह नियुक्ति बिहार लोक सेवा आयोग (BPSC) के माध्यम से की जाएगी।

शिक्षा विभाग ने यह निर्णय वर्ष 1991 के बाद से रिक्त पड़े पदों और व्यवस्था की निष्क्रियता को देखते हुए लिया है। जानकारी के अनुसार, पिछले 34 वर्षों में इन पदों पर कोई नई नियुक्ति नहीं की गई, जिससे 70% पद खाली पड़े हैं। इससे शिक्षा व्यवस्था के संचालन में बाधा उत्पन्न हो रही थी।

3.सैनिक स्कूल की तर्ज पर पटना में खुलेगा बिहार का पहला पुलिस विद्यालय, 50% सीटें पुलिसकर्मियों के बच्चों के लिए आरक्षित:-

बिहार में अब सैनिक और नेतरहाट स्कूल की तर्ज पर पहली बार एक आवासीय पुलिस विद्यालय खोला जा रहा है। यह विद्यालय पटना के नौबतपुर क्षेत्र में स्थापित किया जाएगा। इसके लिए लगभग दो एकड़ जमीन चिन्हित की जा चुकी है।

4. अब मध्याह्न भोजन की जिम्मेदारी प्रधान शिक्षकों के बजाय अन्य शिक्षकों को सौंपी जाएगी

बिहार के प्राथमिक स्कूलों में मध्याह्न भोजन योजना के संचालन में बड़ा बदलाव किया गया है। अब इस योजना की जिम्मेदारी प्रधानाध्यापक (प्रधान शिक्षक) के बजाय अन्य योग्य शिक्षकों को सौंपी जाएगी। यह निर्णय स्कूल प्रशासन पर अतिरिक्त भार कम करने और योजना के प्रभावी संचालन को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से लिया गया है।

शिक्षा जगत की खबरें

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

बिहार:- शिक्षा से जुड़ी प्रमुख खबरें

5. कक्षा 1 से 12 तक की पढ़ाई हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में, राज्यभर के 1213 स्कूलों में होगी नई व्यवस्था।

6. गर्मियों की छुट्टी के बाद स्कूल खुलने पर होगा "स्वागत सप्ताह", बेहतर होमवर्क करने वाले छात्र होंगे सम्मानित।

7. बिहार की 2678 बस्तियों में अब भी प्राथमिक स्कूल नहीं, शिक्षा पहुंच से एक किमी दूर बच्चें

8. बिहार के सभी 538 प्रखंडों में खुलेंगे आवासीय करियर सेंटर, सरकारी स्कूलों के छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं की मुफ्त तैयारी

9. स्कूली शिक्षा ग्रेडिंग रिपोर्ट में बिहार के 22 जिलों ने किया सुधार, 16 जिले जस-के-तस

10. गर्मी की छुट्टी के बाद सरकारी स्कूलों में तीन बार बनेगी बच्चों की ऑनलाइन उपस्थिति, शिक्षा व्यवस्था में बड़ा बदलाव

विविध

डॉ०अजय कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय चाँपी कोढ़ा कटिहार (बिहार)

शुभांशु शुक्ला की सफल वापसी

अंतरिक्ष का अंतहीन संसार हमेशा से मानव मन में अनेकों जिज्ञासाओं को जन्म देता रहा है। बचपन में दादी-नानी के किस्सों में यह परियों और देवताओं का निवास स्थान रहा तो कभी स्वर्ग और नर्क जैसी अवधारणाओं से जुड़ गया।रात में लाखों, करोड़ों नहीं बल्कि अरबों तारों के झिलमिल प्रकाश से बनता तिलिस्म मानव मन- मस्तिष्क को हमेशा से इस दुनिया के अन्वेषण को प्रेरित करता रहा है।
भारतीय मनीषियों ने मानवीय बौद्धिक विकास के प्रारम्भिक काल से ही इस दिशा में अनेकों जिज्ञासाओं के समाधान में रुचि दिखाई साथ ही इसके समाधान के लिए शोध और अन्वेषण कर इसके कई रहस्यों को उद्घाटित भी किया।

अंतहीन अंतरीक्ष के अन्वेषण के आधुनिक युग में अंतरीक्ष यात्रा एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुई है।इस कड़ी में प्रथम अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा के बाद भारत के दूसरे अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला का अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर जाना और विभिन्न प्रकार के कई प्रयोगों को सफलतापूर्वक संपन्न करना मील का पत्थर साबित हुआ है।
शुभांशु शुक्ला का जन्म 10 अक्टूबर 1985को लखनऊ, उत्तर प्रदेश में हुआ। इनके पिता का नाम शम्भू दयाल शुक्ला एवं माँ का नाम आशा शुक्ला है।इनके परिवार में उनकी पत्नी कामना शुक्ला (डेंटिस्ट) और एक पुत्र कियाश भी है। उन्होंने सिटी मांटेसरी स्कूल से अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूरी की।

शुभांशु शुक्ला भारतीय सेना में फाइटर काम्बेट लीडर के साथ ही टेस्ट पायलट भी हैं। विभिन्न विमानों के 2000घंटा उड़ान का अनुभव रखने वाले शुभांशु ने एक्सिओम मिशन 4 के तहत अंतरिक्ष स्टेशन की यात्रा की।अन्य तीन अंतरिक्ष यात्रीयों के साथ 25सितंबर को उन्होंने नासा के फ्लोरिडा से अंतरिक्ष स्टेशन की यात्रा की और 26 सितंबर को वह अपने अंतरिक्ष स्टेशन से जुड़े।जहाँ उन्होंने कुल अठारह दिन बिताए।अपने अंतरिक्ष प्रवास के दौरान उन्होंने विभिन्न प्रयोगों के साथ ही ,मूंग और मेंथी की खेती भी की।
अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर 18दिन सफलतापूर्वक बिताने के बाद शुभांशु 15जुलाई 2025 को अपने अन्य तीन साथियों के साथ सकुशल धरती पर वापस आ गए। अपनी इस यात्रा से वे अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर समय बिताने वाले प्रथम भारतीय और अंतरिक्ष में जाने वाले द्वितीय भारतीय भी बन गए हैं।
उम्मीद की जाती है कि उनकी यह साहसिक अंतरिक्ष यात्रा भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक नया अध्याय जोड़ने में सफल होगी और साथ ही अंतरिक्ष के कुछ रहस्यों को उद्घाटित करने में भी सफल रहेगी।

विविध

बीट को ढाल बना सामाजिक बेड़ियां तोड़ रही बेटियां

डॉ०अजय कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय चाँपी कोढ़ा कटिहार (बिहार)

संगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति, अनुशासन और सामाजिक बदलाव का माध्यम है। एक ग्रामीण विद्यालय में कार्यरत शिक्षक/शिक्षिका होने के नाते मेरा सपना था कि गाँव के लड़के-लड़कियों को एक साथ म्यूजिकल बैंड में प्रशिक्षित कर आत्मविश्वासी, सशक्त और मंच पर प्रस्तुत करने योग्य बनाया जाए। यह कार्य आसान नहीं था, लेकिन सामूहिक प्रयासों से यह संभव हो पाया।

लक्ष्य था
गाँव के 50 विद्यार्थियों (25 लड़के और 25 लड़कियाँ) को म्यूजिकल बैंड के लिए प्रशिक्षित कर, उन्हें सामाजिक मंच और प्रतियोगिताओं में भाग लेने लायक बनाना
राष्ट्रीय मंच तक पहुंचाना एवं आत्म निर्भर बनाना।

दैनिक भास्कर — पीरो • जगदीशपुर

प्रतियोगिता • अब जोनल स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए जाएगी पंजाब

राज्यस्तरीय इंटर स्कूल बैंड प्रतियोगिता में भोजपुर अव्वल

छात्राएं दिसंबर माह में जोनल स्तरीय प्रतियोगिता में अपना हुनर दिखाएंगी

एजुकेशन रिपोर्टर | आरा

[illegible]

बैंड के साथ छात्राएं

जोनल स्तरीय प्रतियोगिता में सफल होने पर गणतंत्र दिवस परेड में शामिल होने का मिलता है मौका

[illegible]

सेना की नौकरी में 10% मिलता है आरक्षण

[illegible]

राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में इन छात्राओं ने की शिरकत

[illegible]

चुनौतियाँ थीं......
गाँव की मानसिकता :
– लड़कियों के संगीत में भाग लेने को लेकर अभिभावकों की झिझक।
– बैंड को "लड़कों का काम" मानने वाली सोच।
संसाधनों की कमी :
– वाद्ययंत्र नहीं थे।
– प्रशिक्षक उपलब्ध नहीं थे।
– अभ्यास स्थल सीमित था।
समय और सामूहिक समन्वय की दिक्कत :
– स्कूल टाइम के बाद बच्चों को इकट्ठा करना।
– लड़कियों को देर शाम तक अभ्यास की अनुमति नहीं मिलना

समाधान और प्रयास :
1. गाँव के लोगों से संवाद :
– ग्राम सभा में जाकर योजना बताई।
– माता-पिता से व्यक्तिगत बातचीत की, भरोसा दिलाया कि लड़कियों की सुरक्षा और सम्मान सर्वोपरि रहेगा।
– पंचायत ने भी सहयोग का आश्वासन दिया।
2. पूर्व छात्रों का सहयोग :
– स्कूल के कुछ पूर्व छात्र, जो संगीत सीख चुके थे, वे बैंड को प्रशिक्षण देने के लिए आगे आए।
– उन्होंने बिना किसी शुल्क के बच्चों को शुरुआती अभ्यास कराया।
3. YouTube और डिजिटल मदद :
– बैंड की शुरुआती थ्योरी और अभ्यास के लिए यूट्यूब वीडियो का सहारा लिया गया।
– लड़कियों को अलग से वीडियो के माध्यम से ताल, तालमेल और बीट्स सिखाई गईं।
4. बॉयज़ बैंड से मदद लेकर लड़कियों को सिखाना :
– हमारे स्कूल का लड़कों का एक बैंड पहले से था।
– उन्हीं लड़कों ने धैर्यपूर्वक लड़कियों को एक-एक वाद्य यंत्र सिखाना शुरू किया।
– यह गेंद से गेंद तक सीखने की प्रेरणादायक प्रक्रिया थी।

विविध

डॉ०अजय कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय चाँपी कोढ़ा कटिहार (बिहार)

उपलब्धियां

50 विद्यार्थियों की एक सशक्त म्यूजिकल बैंड टीम बनी – जिसमें लड़के और लड़कियाँ समान रूप से शामिल हैं।
विद्यालय में हर राष्ट्रीय पर्व पर बैंड प्रदर्शन एक परंपरा बन गई।
जिला और राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भागीदारी कर विद्यालय और गाँव का नाम रोशन किया।
लड़कियों के आत्मविश्वास में जबरदस्त वृद्धि – जो पहले मंच पर आने से डरती थीं, अब तालियों की गड़गड़ाहट में प्रस्तुति देती हैं।

यह म्यूजिकल बैंड सिर्फ एक समूह नहीं, बल्कि गाँव में समानता, सहभागिता और परिवर्तन का प्रतीक बन गया है। यह संघर्ष, नवाचार, तकनीक और सामुदायिक सहयोग का सजीव उदाहरण है।
आज यह बैंड हर गाँव के स्कूल के लिए एक मॉडल बन चुका है – कि यदि इच्छा हो, तो संगीत से भी बदलाव संभव है। कई छात्रों को सेना में नौकरी पाने में 10 अंक की छूट। छात्राओं का सामाज को संदेश कि अगर हमें भी मौका मिले तो हम किसी से कम नहीं

कंचन कामिनी
प्रधानाध्यापिका
दिलीप नारायण +2 उच्च विद्यालय
कहथू मसूढी जगदीशपुर भोजपुर

विविध सुर्खियों में

संकलन : मृत्युंजय ठाकुर, पूर्वी चम्पारण

कम नींद बिगाड़ रही बच्चों की दिमागी बनावट

हेमवती नंदन राजौरा

नई दिल्ली। बच्चों में मोटापा बढ़ने के साथ-साथ पर्याप्त नींद न लेने की आदत उनकी दिमागी बनावट को बिगाड़ रही है। एम्स दिल्ली के एक अध्ययन में यह बात सामने आई है।

बच्चों में नींद, मोटापा और मस्तिष्क की संरचना के संबंध पर हुए कई वैश्विक अध्ययनों के विश्लेषण को समाहित करते हुए यह शोधपत्र प्रकाशित किया है। एम्स के न्यूरो बाल रोग विभाग के प्रोफेसर डॉ. बिस्वरूप ने यह अध्ययन किया है। उनके अध्ययन पत्रों के सार में यह बात सामने आई है कि खराब नींद का सीधा संबंध मस्तिष्क के विशेष हिस्सों के आकार में बदलाव से है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार, हर तीन में से एक बच्चा या किशोर पर्याप्त नींद नहीं ले रहा और जो नींद ले रहे हैं, उनकी नींद की गुणवत्ता भी संतोषजनक नहीं है। यह स्थिति मोटापे को बढ़ाने के साथ-साथ बच्चों की मानसिक क्षमताओं और व्यवहार पर भी असर डाल रही है। ताजा आंकड़े बताते हैं कि भारत सहित कई देशों में बच्चों में मोटापे की दर 18 फीसदी तक पहुंच चुकी है।

हार्मोन असंतुलन ने बढ़ाया मोटापे का खतरा

विशेषज्ञों ने चेताया है कि नींद की गड़बड़ी से बच्चों के हार्मोनल संतुलन पर असर पड़ता है। इससे लेप्टिन और ग्रेलिन जैसे भूख नियंत्रित करने वाले हार्मोन अनियमित हो जाते हैं। इसके चलते बच्चे ज्यादा खाते हैं और निष्क्रिय रहते हैं, जिससे मोटापा बढ़ता है।

इन हिस्सों में बदलाव

प्रो. बिस्वरूप ने बताया कि नींद की गड़बड़ी से मस्तिष्क में पैलेडम और पुटामेन नामक हिस्सों में बदलाव देखा गया। ये शरीर में नींद, भूख, तृप्ति को नियंत्रित करते हैं। अनिद्रा से हिप्पोकैम्पस,फ्रंटल ग्रे मैटर (मस्तिष्क के दो हिस्से जो याददाश्त, भावनाओं और संज्ञानात्मक कार्यों में भूमिका निभाते हैं।) की मात्रा में कमी आती है।

उन्नत तकनीकों से जांच

डॉक्टरों का सुझाव है कि नींद विकारों की जांच के लिए पॉलीसोमनोग्राफी का प्रयोग हो। इससे इनके इलाज की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकें।

दैनिक भास्कर — गयाजी भास्कर 02-06-2025

भास्कर खास — प्राइमरी स्कूल माहपुर की शिक्षिका रेणु वक्षुशबु की पहल को अभिभावकों ने सराहा

दो शिक्षिकाओं ने शुरू किया स्टूडेंट ऑफ द मंथ का अवार्ड

शून्य नवाचार का किया प्रयोग, चार्ट पेपर से बनाया क्राउन और बैच

कठपुतली को घुमाते-नचाते शिक्षिका करती है बच्चों से संवाद

कठपुतली कला से बो रही शिक्षा का संस्कार

कठपुतली के माध्यम से बच्चों के साथ संवाद करती शिक्षिका

शिक्षा में नवाचार और सकारात्मक परिवर्तन का अग्रदूत बना 'टीचर्स ऑफ बिहार'

छह वर्षों से शिक्षकों को एकजुट कर रहा यह मंच, बना प्रेरणा का स्रोत

स्कूली बच्चे विद्यालय परिसर में 'मां' के नाम पौधा लगाएंगे

- एक पेड़ मां के नाम 2.0 अभियान के तहत स्कूलों में होगा पौधरोपण
- स्कूल परिसर के अंदर-बाहर की बंजर जमीन पर करेंगे पौधरोपण

पटना, हिटी। बिहार के सरकारी स्कूलों के बच्चे जिस विद्यालय में पढ़ रहे वहां मां के नाम पौध लगाएंगे। उसकी रखवाली भी करेंगे। 'एक पेड़ मां के नाम 2.0' अभियान के तहत स्कूलों में शिक्षकों के सहयोग से बच्चों से पौधरोपण कराया जाएगा।

30 सितंबर तक इस अभियान के तहत स्कूल परिसर के अंदर-बाहर या आसपास चिह्नित बंजर जमीन पर बच्चे पौधरोपण करेंगे। इसके लिए वन्य विभाग की नर्सरी, उद्यान विभाग और निकाय से भी बच्चों को पौधे उपलब्ध कराए जाएंगे। इसके लिए बच्चों को स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग भारत सरकार के मिशन लाइफ पोर्टल https://ecoclubs.education.gov.in/ और पर्यावरण एवं वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के https://merilife.nic.in/ पोर्टल पर पहले पंजीकृत कराना होगा। इसी लिंक पर जाकर पौधरोपण से संबंधित आंकड़ा हर विद्यालय से इस अभियान नोडल शिक्षकों की ओर से अपलोड किया जाएगा।

नोडल पदाधिकारी करें संपर्क : इसे लेकर बिहार शिक्षा परियोजना परिषद के राज्य परियोजना निदेशक मयंक वरवड़े ने सभी जिला शिक्षा पदाधिकारी, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी (एसएसए) को दिया है। मालूम हो कि 5 जून 2025 को को इस अभियान के दूसरे चरण का शुभारंभ किया गया था। केन्द्र ने राज्य शिक्षा विभाग को अभियान को चलाने का निर्देश दिया है। सुझाव के लिए नोडल पदाधिकारी डॉ. उदय कुमार उज्ज्वल से संपर्क कर सकते हैं।

अच्छी शिक्षा दिलाना सरकार की प्राथमिकता : शिक्षा मंत्री

- एससीईआरटी में दो दिवसीय कार्यशाला शुरू, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर जोर
- एक वर्ष में शिक्षा की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुए हैं : सिद्धार्थ

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। शिक्षा मंत्री सुनील कुमार ने कहा कि राज्य के स्कूली बच्चों को अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिलाना सरकार की प्राथमिकता है। इसके लिए जिलों में शिक्षा के क्रियान्वयन में पारदर्शिता, नियमित शिक्षक प्रशिक्षण और गुणवत्ता पर विशेष बल देना आवश्यक है।

गुरुवार शिक्षा मंत्री एससीईआरटी में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए बोल रहे थे। शिक्षा मंत्री ने कहा कि शिक्षा बजट में वृद्धि के साथ राज्य सरकार की प्राथमिकता स्पष्ट है। अब जरूरत है कि विद्यालय स्तर तक बदलाव दिखे। उन्होंने जिला शिक्षा पदाधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि वे विद्यालयों की नियमित मॉनिटरिंग सुनिश्चित करें और शिक्षा को समाज की आकांक्षाओं से जोड़ें। एससीईआरटी की भूमिका शिक्षा सुधार में लगातार प्रभावशाली होती जा रही है। अपर मुख्य सचिव डॉ. एस. सिद्धार्थ ने कहा कि बीते एक वर्ष में राज्य में शिक्षा की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है, लेकिन हमें और आगे बढ़ना है। गर्मी छुट्टी के बाद जब विद्यालय दोबारा खुलें, तब विद्यालय तैयार हों। यह हम सबकी जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि शिक्षा केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। हमें व्यावहारिक ज्ञान को समृद्ध करना होगा।

बैगलेस शनिवार में जुड़ी स्किल शिक्षा भी

बदलाव

- शिक्षा विभाग ने तैयार किया नया पाठ्यक्रम
- 15 दिनों में वेबसाइट पर हो जाएगा अपलोड

मुजफ्फरपुर, प्रसं। बैगलेस शनिवार में स्किल शिक्षा समेत कई नई गतिविधि जोड़ी गई है। शिक्षा विभाग ने बैगलेस शनिवार का नया पाठ्यक्रम तैयार किया है। शनिवार को जिले के शिक्षक के उठाए गए सवाल पर अपर मुख्य सचिव एस सिद्धार्थ ने इस संबंध में जानकारी दी। अपर मुख्य सचिव ने कहा है कि बिहार के 70 हजार से अधिक स्कूलों में इस नई गाइडलाइन के तहत बैगलेस शनिवार का पाठ्यक्रम लागू किया जाएगा।

उन्होंने बताया है कि 10 से 15 दिनों में इसे वेबसाइट पर अपलोड कर दिया जाएगा। जिले के बुनियादी विद्यालय बखरी के शिक्षक केशव कुमार ने इस सवाल को उठाया था कि बैगलेस शनिवार के नाम पर स्कूलों में सुरक्षित शनिवार के सिवाए कुछ नहीं हो रहा है। ऐसे में यह केवल कागजी खानापूर्ति तक सिमट गया है।

तीन साल बाद भी नहीं पहुंची मार्गदर्शिका

तीन साल पहले 2022 में मुख्यमंत्री ने बैगलेस शनिवार की शुरूआत की थी। इससे संबंधित गतिविधि मार्गदर्शिका स्कूलों में पहुंचनी थी। जिले के शिक्षक ने सवाल उठाया कि आजतक यह मार्गदर्शिका स्कूलों नहीं पहुंची। ऐसे में कुछ सुरक्षित शनिवार का कार्यक्रम ही हो रहा है। अन्य गतिविधियां ठप हैं। शिक्षक की इस जानकारी पर अपर मुख्य सचिव ने बताया कि बैगलेस शनिवार कार्यक्रम को नए सिरे से अपडेट किया जा रहा है।

विविध सुर्खियों में

संकलन : मृत्युंजय ठाकुर, पूर्वी चम्पारण

हिन्दुस्

बीहट मध्य विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. आयुष केसरी व अन्य।

स्टोरीटेलिंग के माध्यम से आत्मशक्ति की दी प्रेरणा

बीहट, निज संवाददाता। बीहट मध्य विद्यालय में शनिवार को 'वीकेंड विजन' कार्यक्रम के ग्रीष्मकालीन सत्र की शुरुआत हुई। 'वीकेंड विजन-सीजन 2' की पहली कड़ी में बच्चों से संवाद करते हुए नीति आयोग भारत सरकार के रीजनल मेंटर के रूप में कार्यरत डॉ. आयुष केसरी ने अपने कहानियों के माध्यम से उद्यमिता को नई दृष्टि देते हुए कहा कि कलात्मक ढंग से कही गई कहानियां जादू सा असर करती हैं - ये आत्म-सशक्तीकरण, नेतृत्व और सामाजिक परिवर्तन की दिशा में पहला कदम होती हैं।

उन्होंने राजस्थान में पानी की समस्या से जूझते एक रेगिस्तानी गाँव के बच्चे सूर्यकांत त्रिपाठी के बालपन की कहानी सुनाते हुए यह भी रेखांकित किया कि स्टोरीटेलिंग केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि यह हमें समस्याओं से जूझने और उसका हल ढूंढने को प्रेरित करती हैं तथा यह हमारे आत्म-अभिव्यक्ति, संवाद कौशल और नेतृत्व की नींव है। डॉ. केसरी ने अपने संवाद में यह भी बताया कि यह यात्रा केवल कहानियाँ सुनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि बच्चों को यह सिखाने का माध्यम भी है कि कैसे वे

40 हजार से अधिक बच्चों से कर चुके हैं संवाद

अपनी 'स्टोरी यात्रा' अभियान के दूसरे संस्करण के तहत बीहट मध्य विद्यालय पहुंचे डॉ. आयुष केसरी अब तक 8 राज्यों के 40 हजार से अधिक विद्यार्थियों के साथ संवाद करते हुए अपनी कहानियों के माध्यम से उद्यमिता को नई दृष्टि दी है। डॉ. आयुष केसरी सहरसा के मूल निवासी हैं। बीएचयू से पर्यटन प्रबंधन में पीएचडी उपाधि प्राप्त कर नीति आयोग, भारत सरकार के रीजनल मेंटर के रूप में कार्यरत हैं।

ला सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन एवं विषय प्रवेश वरिष्ठ स्नातक शिक्षिका अनुपमा सिंह ने किया। एचएम रंजन कुमार ने अतिथि का स्वागत करते हुए वीकेंड विजन की निरंतरता और प्रासंगिकता पर बल दिया।

कार्यक्रम प्रबंधन में शिक्षक पूनम कुमारी, प्रीति कुमारी, सोनम कुमारी, तथा बाल संसद, हाउस लीडर्स और कक्षा 8 के स्वयंसेवी छात्र दल ने सराहनीय भूमिका निभाई। मौके पर किरण कुमारी, नूतन कुमारी समेत सभी वर्गों से तकरीबन 600 बच्चे मौजूद थे।

बिहार की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी टीचर्स ऑफ बिहार ने स्थापना के छह वर्ष किये पूरे, एएन सिन्हा इंस्टीट्यूट में हुआ भव्य कार्यक्रम

- वार्षिकोत्सव: सरकारी विद्यालयों में नवाचारी गतिविधियों के माध्यम से पढ़ाने वाले शिक्षक हुए सम्मानित।
- शिक्षा विभाग के एसीएस डॉ.एस सिद्धार्थ, एससीईआरटी निदेशक सज्जन.आर एवं टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार, टेक्निकल टीम लीडर इंजीनियर शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने टीओबी के नवाचारी परियोजना का शुभारंभ किया।
- पीएम पोषण योजना गणक, द्रोणविद्या और प्रोजेक्ट शिक्षक साथी का शुभारंभ

पटना/ खोजभाव संवाददाता

राज्य के सरकारी विद्यालयों में शिक्षा को सशक्त बनाने वाली बिहार की सबसे बड़ी टीचिंग-लर्निंग समुदाय "टीचर्स ऑफ बिहार" (टीओबी) ने स्थापना के छह वर्ष पूरे कर लिए। 13 अप्रैल 2025 रविवार को ए.एन.सिन्हा इंस्टिट्यूट के सभागार में इस मौके पर वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ.एस सिद्धार्थ कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि मौजूद रहे। साथ ही शिक्षा विभाग के सचिव अजय यादव, एससीईआरटी के निदेशक सज्जन.आर बतौर विशिष्ट अतिथि ...

टीओबी के संस्थापक शिव कुमार ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

मौके पर डॉ.एस सिद्धार्थ ने कविता और कहानियों के संकलन गद्य गुंजन-पद्य पंकज, शिक्षकों के विचारों का मुखपत्र अभिमत का विमोचन किया। विशिष्ट अतिथियों ने टीचर्स ऑफ बिहार के नवाचारी परियोजनाओं का शुभारंभ किया। इसमें पीएम पोषण योजना गणक, द्रोण विद्या और प्रोजेक्ट शिक्षक साथी का शुभारंभ हुआ। शिक्षा विभाग के सचिव अजय यादव ने टीचर्स ऑफ बिहार के कार्यों की जमकर तारीफ की एवं शिक्षा हित में इनके द्वारा किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा करते हुए समूह के उज्जवल भविष्य की कामना की। एससीईआरटी निदेशक सज्जन.आर ने कहा कि समूह के शिक्षकों का ...

बदलाव लाने के लिए टीचर्स ऑफ बिहार समूह के सदस्य विगत छह वर्षों से अथक प्रयास कर रहे हैं जो अब सरकारी विद्यालयों में दिखने भी लगा है। मौके पर एससीईआरटी के पूर्व संयुक्त निदेशक सैयद अब्दुल मोइन, संयुक्त निदेशक (डायट) डॉ.रश्मि प्रभा, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद के राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ.उदय कुमार उज्जवल मौजूद रहे।

समूह के कार्यों की एससीईआरटी ने भी की है सराहना: टीचर्स ऑफ बिहार ने डिजिटल शिक्षा और नवाचारों में बिहार के अलावा राष्ट्रीय स्तर पर भी छाप छोड़ी है। एससीईआरटी ने भी बिहार की इस शिक्षक समूह के कार्यों की सराहना की है। एससीईआरटी ने समूह से दूसरे राज्यों को भी सीखने को कहा है।

हमारा प्रथम लक्ष्य: कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ.एस सिद्धार्थ ने टीचर्स ऑफ बिहार समूह से जुड़े शिक्षकों के नवाचार एवं शिक्षा के क्षेत्र में उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि शिक्षक की नौकरी अन्य नौकरियों से अलग है। इनपर बेहतर समाज निर्माण की जिम्मेदारी होती है। इसलिए शिक्षक कल के भविष्य यानी बच्चों को सर्वोपरि रखें। अपनी तकलीफ को भूलकर बच्चों के कल्याण के लिए कार्य करें। शिक्षकों का कल्याण करने के लिए सरकार एवं विभाग है। मौके पर डॉ.एस सिद्धार्थ, सचिव अजय यादव एवं एससीईआरटी निदेशक सज्जन.आर ने नवाचारी शिक्षकों को सम्मानित भी किया।

टीम, टीचर्स ऑफ बिहार के प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार एवं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं शैक्षिक बेहतरी के लिए हमारा प्रयास एवं कार्य आगे भी इसी तरह समर्पित भाव से जारी रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में टीचर्स ऑफ बिहार का कारवां इसी तरह निरंतर आगे बढ़ता रहेगा। यह एक शिक्षक समूह ही नहीं बल्कि एक ऐसा मंच है जो शिक्षकों का, शिक्षकों द्वारा एवं शिक्षकों के लिए है। इस मंच का मुख्य फोकस इस बात पर रहता है कि शिक्षकों के कार्यों को उनका उचित सम्मान ...

जोहार झारखण्ड

विश्व माहवारी स्वच्छता दिवस 2025 पर यूनिसेफ और टीचर्स ऑफ बिहार की संयुक्त पहल पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

28-31 मई तक आयोजित की गई विभिन्न प्रकार की गतिविधियां

जोहार झारखण्ड/संवाददाता।

पटना। विश्व माहवारी स्वच्छता दिवस के अवसर पर विश्व की प्रतिष्ठित संस्था यूनिसेफ एवं बिहार की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी - टीचर्स ऑफ बिहार-द चेंज मेकर्स - ने 28 से 31 मई तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर माहवारी के दौरान स्वच्छता एवं सुरक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता लाने के उद्देश्य से एक साझा अभियान चलाया। इस दौरान विभिन्न प्रकार की गतिविधियां आयोजित की गई जिसमें

जिसमें मुख्य रूप से

- विश्व माहवारी स्वच्छता दिवस एक्सक्लूसिव ऑनलाइन क्विज
- रेड डॉट चैलेंज
- कविता, कहानी एवं आलेख लेखन प्रतियोगिता
- लेट्स टॉक ऑन पीरियड्स-खुलकर करें माहवारी पर बात

शिक्षकों, छात्रों एवं आम लोगों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार ने बताया कि लड़कियां हो या लड़के-हर किसी को है जानकारी की जरूरत। इसी उद्देश्य से हम सब मिलकर माहवारी स्वच्छता के प्रति समाज में सकारात्मक सोच को बढ़ावा देने के लिए यूनिसेफ के साथ मिलकर यह जागरूकता अभियान चलाया। टेक्निकल टीम लीडर ई.शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने बताया कि विश्व माहवारी दिवस के अवसर पर लोगों में जागरूकता लाने के उद्देश्य से 28 से 31 मई तक हमने विभिन्न गतिविधियां आयोजित किया। उक्त जानकारी देते हुए टीचर्स ऑफ बिहार के प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने संयुक्त रूप से बताया कि टीचर्स ऑफ बिहार केवल शिक्षा, शिक्षक एवं छात्रों के हित में कार्य नही करता बल्कि समय समय पर समाज के लोगों के प्रति भी बढ़-चढ़कर विभिन्न प्रकार की जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर जागरूक करता है।

दैनिक भास्कर

2025-06-01

सासाराम / कैमूर भास्कर (4)

पहल • स्कूल में अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी का आयोजन हुआ

शिक्षकों ने छात्रों के लिए टाई-बेल्ट खरीदा

सिटी रिपोर्टर | मधुरा

शिक्षकों ने वेतन से छात्रों के लिए आईकार्ड टाई बेल्ट बैच खरीदे, जिसका वितरण अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी के अवसर पर विद्यालय में छात्रों के बीच किया गया। बता दें कि कुदरा प्रखंड अंतर्गत न्यू प्राथमिक विद्यालय तरहनी में विभागीय निर्देश के आलोक में शिक्षक अभिभावक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों द्वारा विभागीय योजनाओं की जानकारी अभिभावकों को दी गई। इसके अलावा 2 जून से शुरू हो रहे ग्रीष्म अवकाश हेतु बच्चों को गृह कार्य दिया गया। अभिभावकों को घर में ही एक पढ़ाई का कोना बनाने का निर्देश दिया गया। जहां बच्चे आसानी से पढ़ सकें। बता दें कि विद्यालय के प्रधानाध्यापक सिकेंद्र कुमार सुमन तथा सभी शिक्षकों ने अपने वेतन की राशि से विद्यालय के सभी बच्चों हेतु आई कार्ड, टाई, बेल्ट और बैच खरीदे। विद्यालय के शिक्षकों द्वारा प्रतिवर्ष बच्चों के लिए इन सामग्रियों का क्रय किया जाता है। यहां के प्रधानाध्यापक सिकेंद्र कुमार सुमन को विद्यालय में नवाचार एवं बेहतर विद्यालय प्रबंधन हेतु राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा वर्ष 2024 में राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान से नवाजा गया है। बता दें कि शिक्षक सिकेंद्र कुमार सुमन द्वारा विद्यालय में छात्रों के लिए कई नवाचार किए गए हैं। स्कूल में छात्रों की पढ़ाई के लिए ऑनलाइन व्यवस्था भी की गई है। इस कार्य में विद्यालय के सभी शिक्षक भी प्रधानाध्यापक का भरपूर सहयोग कर रहे हैं। जिससे विद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था काफी बेहतर है। विद्यालय में छात्रों को बेहतर व्यवस्था उपलब्ध कराई जा रही है। कार्यक्रम में विद्यालय में नामांकित सभी बच्चों के अभिभावक, ग्रामीण जनता, शिक्षिका रफत परवीन, रक्षा कुमारी और पल्लवी कुमारी मौजूद रहे।

पढ़ेंगे बढ़ेंगे और सीखेंगे हम विषय पर गोष्ठी हुई

स्कूल के प्रधानाध्यापक सिकेंद्र कुमार सुमन ने बताया कि विभागीय निर्देश के आलोक में विद्यालय में अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें पढ़ेंगे बढ़ेंगे और सीखेंगे हम विषय पर चर्चा की गई। वर्ग शिक्षक एवं प्रधानाध्यापकों के लिए भी यह महत्वपूर्ण मौका होगा की छुट्टी को छात्र किस प्रकार से रचनात्मक बना सकेंगे इस पर अभिभावकों से चर्चा की गई। विद्यालय के वातावरण को बेहतर बनाने के लिए अभिभावकों के सुझाव के लिए गए। अभिभावकों को बताया गया कि घर पर बच्चों को पढ़ने के लिए निश्चित रूप से प्रेरित करेंगे। अभिभावक शिक्षक संगोष्ठी का आयोजन कर बच्चों के बेहतर पठन-पाठन पर चर्चा की गई।

सच्ची बात, बेधड़क
दैनिक भास्कर

मिशन निपुण बिहार के लिए जिले में पहल तेज

- भाषा-गणित में निपुण होंगे कक्षा तीन के बच्चे
- कैलेंडर को स्कूलों में लिखने का निर्देश

भागलपुर, वरीय संवाददाता। जिले में मिशन निपुण बिहार पहल को तेज कर दिया गया है। इस योजना का उद्देश्य भागलपुर समेत पूरे प्रदेश में सत्र 2026-27 तक कक्षा तीन तक के बच्चों को भाषा व गणित में निपुण बनाना है।

जिला शिक्षा विभाग की ओर से मिशन निपुण के कैलेंडर को संबंधित स्कूलों की दीवारों पर लिखने का निर्देश दिया गया है। जिला शिक्षा पदाधिकारी राजकुमार शर्मा ने बताया कि हिंदी भाषा के अंतर्गत कक्षा एक से तीन तक क्रमशः अक्षरों की पहचान, सरल शब्दों को पढ़ना-लिखना, वाक्य पढ़ना, समझना और उत्तर देना सिखाया जाएगा। वहीं गणित के क्षेत्र में कक्षा एक से तीन तक के बच्चों को क्रमशः 99 से 999 तक की संख्याओं को पढ़ना-लिखना, जोड़-घटाव, गुणा-भाग, लंबाई, समय व मापन की अवधारणाओं को समझने और हल करने की क्षमता विकसित की जाएगी। उन्होंने बताया जिले के सरकारी स्कूलों में इसकी शुरुआत शुरू हो गई है।

स्कूलों में आपातकालीन दरवाजा अनिवार्य

गाइड लाइन जारी

संवाददाता, पटना

बिहार शिक्षा परियोजना परिषद राज्य ने सभी विद्यालयों की सुरक्षा और संरक्षा सुनिश्चित कराने के लिए गाइड लाइन जारी की है. इसमें कहा गया है कि स्कूल भवनों में चहारदीवारी का होना आवश्यक है. इसके साथ ही क्लास में पंखे व्यवस्थित ढंग से लगे होने चाहिए. विद्यालय में आपातकालीन द्वार का होना जरूरी है. इस गाइड लाइन में 'विद्यालय सुरक्षा एवं संरक्षा मार्गदर्शिका के अनुपालन का निर्देश दिये हैं. यह निर्देश परिषद की तरफ से सभी जिला शिक्षा पदाधिकारियों और जिला कार्यक्रम पदाधिकारियों को भेजा गया है. इसमें सिफारिश की गयी है कि सरकारी, गैर सरकारी और निजी विद्यालयों में इसका पालन कराया जाए. राज्य परियोजना निदेशक मयंक वरवड़े की तरफ से जारी इस पत्र में स्पष्ट किया गया है कि सर्वोच्च न्यायालय से पारित आदेश और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षा मंत्रालय की ओर से यह तैयार किया गया है. सभी जिलों को इस बात का खासतौर से ध्यान रखना है कि गाइडलाइन में उल्लेखित सभी प्रावधानों का स्कूलों में प्रभावी ढंग से पालन हो. गाइड लाइन को केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की वेबसाइट से भी डाउनलोड किया जा सकता है.

खास बातें

- कक्षा में छात्रों के व्यवहार को मॉनीटर करना जरूरी है. छात्रों को व्यक्तिगत सुरक्षा के महत्व के बारे में जानकारी देना अहम है. 'गुड टच' और 'बैड टच' के अंतर के बारे में बताया जाना चाहिए.
- स्कूल में बुनियादी दवा बॉक्स/प्राथमिक चिकित्सा किट के साथ-साथ हेल्थ चेकअप को बेहद अहम बताया गया है. छात्रों को व्यापक स्वास्थ्य कार्ड देना जरूरी.
- स्कूलों में साइबर सुरक्षा पर विशेष जोर दिया गया है. स्कूल में आपदा प्रबंधन योजना के साथ-साथ मॉक ड्रिल के संबंध में निर्देश दिये हैं.

विविध सुर्खियों में

संकलन : मृत्युंजय ठाकुर, पूर्वी चम्पारण

तैराकी में दक्ष होंगे राज्य के सरकारी विद्यालयों के बच्चे

- आगे के चरण में जिला और प्रखंड मुख्यालयों में स्वीमिंग पुल बनाए जाएंगे
- भूकंप प्रभावित जिलों में इससे बचाव की मॉक ड्रिल विद्यालयों में तेज होगी
- बीईपी और आपदा प्रबंधन प्राधिकरण संयुक्त रूप से इसपर काम करेगा

आपदा मित्र मॉक ड्रिल कराएंगे

शिक्षा में साकार हों सुधार के सब सपने

कस्तूरीरंगन हों या जे पी नायक, दोनों दिग्गजों की शिक्षा संबंधी सिफारिशों को लागू करना चाहिए। हमें सुविधाजनक सुधारों से आगे बढ़कर चुनौतीपूर्ण सुधारों से गुजरना होगा।

अनुराग बेहर | सीईओ, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन

भाषा और गणित में बच्चों की दक्षता का हुआ सर्वे

एससीईआरटी

- 38 जिलों के तीन हजार स्कूलों के बच्चों को किया गया शामिल

पटना, कार्यालय संवाददाता। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी) की ओर से राज्य के 38 जिलों के 3000 स्कूलों में बच्चों की भाषा और गणित में दक्षता पर सर्वे कराया गया है। इसमें दूसरी कक्षा के बच्चों को शामिल किया गया।

यह बच्चे अपनी कक्षा के स्तर पर भाषा और गणित के सवालों को हल करने में कितने दक्ष है, इसके आकलन के लिए यह सर्वे कराया गया। इसमें भाषा (हिन्दी) और गणित में कुल 24000 हजार बच्चे शामिल हुए। परिषद से मिली जानकारी के अनुसार फरवरी में हुए इस मिडलाइन सर्वे की रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया जा रहा है। जल्द ही रिपोर्ट जारी होगी। इससे पहले इसी कक्षा के लिए मार्च 2022 में बेसलाइन सर्वे किया गया था। मिडलाइन सर्वे से यह पता लगाया जा सकेगा कि इस बीच बच्चों की भाषा और गणित के लिए जो भी प्रयास किए गए उससे कितना सुधार हो रहा है। इससे आगे की रणनीति तैयार करने में मदद मिलेगी। इस सर्वे के बाद एंडलाइन सर्वे भी किया जाएगा।

सरकारी विद्यालयों में लगेंगे स्वास्थ्य शिविर

- बच्चों के स्वास्थ्य के लिए शुरू होगी मुहिम
- स्वास्थ्य केंद्रों की मदद से लगेंगे शिविर

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। राज्य के स्कूली छात्र-छात्राओं के बेहतर स्वास्थ्य के लिए मुहिम शुरू होगी। इसके तहत सभी सरकारी विद्यालयों में स्वास्थ्य शिविर लगाए जाएंगे। नजदीक के स्वास्थ्य केंद्रों की मदद लेकर स्कूलों में शिविर लगेंगे, ताकि बच्चों के स्वास्थ्य जांच की जा सके।

शिक्षा मंत्री सुनील कुमार ने इसको लेकर विभागीय पदाधिकारियों को कार्ययोजना बनाकर कार्य करने का निर्देश दिया है। विभागीय पदाधिकारी बताते हैं कि विद्यालयों में बच्चों की स्वास्थ्य जांच की जाएगी। साथ ही स्वच्छता को लेकर भी छात्र-छात्राओं को जागरूक किया जाएगा। जल्द ही इस संबंध में विभाग की ओर से जिलों को दिशा-निर्देश जारी होने की उम्मीद है। हर विद्यालय में शुद्ध पेयजल की आपूर्ति भी सुनिश्चित करने का निर्देश मंत्री ने दिया है। उन्होंने कहा है कि बहुत सारी बीमारियां दूषित पानी से होती है। ऐसे में स्वच्छ पानी बच्चों को मिले, इसे सुनिश्चित किया जाएगा। बच्चों में साफ-सफाई की भी आदत डाली जाएगी। प्रधानाध्यापकों की जिम्मेदारी होगी कि विद्यालय परिसर साफ-सुथरा रहे।

सीमांचल | नई दिल्ली | रविवार | 01 जून, 2025 | 7

निधि के नवाचार को शिक्षा विभाग के ए.सी.एस. ने सराहा

» "निपुण बाल मंच कोना" पहल ने बच्चों में जगाई रचनात्मक ऊर्जा, ए.सी.एस. एस. सिद्धार्थ ने कहा – यह मॉडल सभी स्कूलों के लिए प्रेरणा

पटना। बिहार शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव (ए.सी.एस.) श्री एस. सिद्धार्थ ने "शिक्षा की बात हर शनिवार" कार्यक्रम के दौरान कुमारी निधि द्वारा किए गए रचनात्मक नवाचार "निपुण बाल मंच कोना" की खुलकर सराहना की। यह कोना बच्चों की रचनात्मकता, अभिव्यक्ति और स्वतंत्र सोच को बढ़ावा देने का एक अभिनव प्रयोग है।

क्या है निपुण बाल मंच कोना?

विद्यालय के एक कमरे को निधि ने इस प्रकार सजाया है कि बच्चे वहाँ अपने मन की रचनाएं – कविताएं, कहानियां, मिट्टी के खिलौने, कबाड़ से बनी वस्तुएं – रख सकते हैं। यह स्थान बच्चों के लिए एक छोटा स्वतंत्र मंच बन गया है जहाँ वे अपनी कल्पनाओं को साकार रूप में ढालते हैं।

निधि ने बताया, "यह कोना हमारे विद्यालय के बच्चों का सबसे पसंदीदा स्थान बन गया है। छोटे-छोटे बच्चे टूटी-फूटी भाषा में कविताएं लाते हैं, मिट्टी के खिलौने बनाकर लाते हैं, और यहाँ सजाते हैं। इससे बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वे रचनात्मक रूप से विकसित होते हैं।"

राजकीय पुरस्कार से सम्मानित निधि की बहुआयामी भूमिका कुमारी निधि को वर्ष 2024 में राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार मिल चुका है। इसके अतिरिक्त वे "टीचर्स ऑफ बिहार" की पत्रिका "प्रज्ञानिका" की संपादिका भी हैं। शिक्षा विभाग की त्रैमासिक बाल पत्रिका "निपुण बाल मंच" का डिजाइन और संपादन कार्य भी निधि द्वारा ही किया जा रहा है। वे बाल विवाह रोकथाम, बाल साहित्य सृजन एवं बाल अधिकार जैसे विषयों पर भी सक्रिय रूप से कार्य कर रही हैं, जिसकी सराहना स्थानीय समाज के साथ-साथ शैक्षिक क्षेत्र में भी की जा रही है। ए.सी.एस. एस. सिद्धार्थ ने कहा कि इस तरह की पहलें सरकारी विद्यालयों में नवाचार की मिसाल हैं और यह मॉडल सभी स्कूलों में अपनाया जाना चाहिए।

स्थानीय समाज ने दी बधाई-निधि की इस रचनात्मक पहल को लेकर शिक्षकों, अभिभावकों एवं समाज के बुद्धिजीवियों ने उन्हें बधाई दी है। यह प्रयास शिक्षा को पुस्तक केंद्रित दृष्टिकोण से हटाकर अनुभव आधारित एवं अभिव्यक्ति प्रधान बना रहा है।

सराहनीय • छातापुर के खतवे टोला का मामला, शादी के बाद 8वीं पास बहू ने जताई थी पढ़ने की इच्छा

स्कूल की रसोइया सास ने बहू का कराया नामांकन, कहा-दो बेटियों को इंटर तक पढ़ाया, बेटी और बहू में कोई फर्क नहीं

भास्कर न्यूज | छातापुर

प्रखंड के कटहरा खतवे टोला के उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय में एक सास अपनी नवविवाहिता बहू का नामांकन कराने खुद पहुंची।

यह दृश्य शिक्षा को लेकर समाज में बढ़ती जागरूकता और बदलाव को लेकर चर्चा का विषय बना हुआ है। विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं भी बहू के नामांकन और नियमित उपस्थिति से खुश हैं।

कटहरा वार्ड-13 की कविता देवी के बेटे की शादी 14 अप्रैल को सोहटा निवासी नीतू कुमारी से हुई थी। शादी के बाद नीतू ने सास से पढ़ाई जारी रखने की इच्छा जताई। कविता देवी ने तुरंत उसका साथ दिया। नीतू ने बताया कि उसने 8वीं तक की पढ़ाई मध्य विद्यालय गिरिधरपट्टी से की है। आगे पढ़ना चाहती थी, लेकिन गांव के माहौल के कारण माता-पिता ने शादी कर दी। ससुराल आने के बाद उसने पढ़ाई की बात दोबारा उठाई। सास, ससुर और पति ने उसका समर्थन किया। नीतू ने कहा कि अब वह पूरी मेहनत से पढ़ाई करेगी। कम से कम इंटर तक पढ़ना चाहती है। सास कविता देवी प्राथमिक विद्यालय कलानंद साह टोला में रसोइया है। उन्होंने गरीबी के बावजूद अपनी दोनों बेटियों को इंटर तक पढ़ाया और फिर शादी की। उन्होंने कहा कि बेटी और बहू में कोई फर्क नहीं समझती। बहू को भी इंटर तक पढ़ाएंगी। इंटर पास करने के बाद सरकारी नौकरी का मौका मिल सकता है।

विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक राजीव कुमार रमन, चंदन कुमार झा, स्मिता ठाकुर, दिवाकर मिश्र, सुनिधि प्रिया, सुजाता कुमारी, नवीन कुमार साह और रवींद्र कुमार आर्या ने इस पहल को समाज के लिए प्रेरणादायक बताया। उन्होंने कहा कि महिलाएं अब खुद शिक्षा की ओर कदम बढ़ा रही हैं। रसोइया सास अपनी बहू को पढ़ा रही है। यह सामाजिक बदलाव का बड़ा संकेत है। इससे और लोगों को भी प्रेरणा लेनी चाहिए।

स्कूल में शिक्षकों के साथ सास और बहू और इनसेट में सास-बहू।

पहल | जरूरतमंद साथियों की मदद के लिए जिले के शिक्षकों ने बनाया सहायता कोष ग्रुप, इस शुरुआत से सूबे के अन्य जिले के शिक्षक भी जुड़े हैं

20-20 रुपये के योगदान से साथियों की मदद करेंगे शिक्षक

हि इनसे सीखें

- एक लाख शिक्षकों को इस अभियान में जोड़ने का रखा गया लक्ष्य
- कोई शिक्षक कैंसर से पीड़ित तो किसी का हुआ है किडनी ट्रांसप्लांट
- विभाग से सहायता मिलने की आस में एक साल से लगाए हैं टकटकी
- ग्रुप से एक दिन में जुड़े सूबे के एक हजार से अधिक शिक्षक

बेटी की शादी व अन्य जरूरत पर करेंगे सहायता

हर माह नहीं बल्कि जरूरत पर डाला जाएगा खाता संख्या

दैनिक भास्कर

भागलपुर 03-05-2025

खुशखबरी सीआईईटी-एनसीईआरटी के प्लानिंग एंड रिसर्च डिविजन से आया आमंत्रण

त्रिवेणीगंज की बेटी संसद में देगी भाषण

पीएम मोदी व लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से भी मिल सकेगी विभा

भास्कर न्यूज | त्रिवेणीगंज (सुपौल)

कोसी इलाके की बेटी विभा परिहार नौ मई को संसद में रवींद्रनाथ टैगोर के जीवन पर भाषण देगी। विभा त्रिवेणीगंज के ललित नारायण लक्ष्मी नारायण प्रोजेक्ट बालिका उच्च विद्यालय की 10वीं की छात्रा है। सीआईईटी-एनसीईआरटी नई दिल्ली के प्लानिंग एंड रिसर्च डिविजन के हेड प्रो. अमरेन्द्र पी बेहरा की ओर से उसे इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रण मिला है।

कार्यक्रम के लिए देशभर से 31 होनहार छात्र-छात्राओं का चयन हुआ है। बिहार से सिर्फ सुपौल की विभा को यह अवसर मिला है। साथ ही वह संसद भवन का भ्रमण भी करेगी। उसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला और कई सांसदों से मिलने का मौका मिलेगा। शिक्षा विभाग के एमडीएम डीपीओ महताब रहमानी विद्यालय पहुंचे। उन्होंने विभा को शुभकामनाएं दीं। विभा का चयन एनसीईआरटी की राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी में शानदार प्रदर्शन के आधार पर हुआ है। यह प्रदर्शनी हरियाणा में आयोजित हुई थी। प्राचार्य सौरव सुमन ने बताया कि सरकारी खर्च पर पहली बार विभा फ्लाइट से यात्रा करेगी।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के जीवन पर देगी व्याख्यान

डीपीओ के साथ छात्रा विभा व स्कूल के शिक्षक।

इस प्रोजेक्ट के आधार पर हुआ चयन

हरियाणा में आयोजित प्रदर्शनी में विभा के मॉडल की थीम-परिवहन एवं संचार थी। इसका शीर्षक स्मार्ट गेट फॉर रोड एंड रेल सेफ्टी था। अक्सर रेलवे ट्रैक क्रॉस करते समय ओवरलोड ट्रक या बस की ऊंचाई बढ़ जाने से ट्रैक के ऊपर जा रहे तार से सटने का डर रहता है। इससे जान-माल का नुकसान होता है। यह समस्या सड़क मार्ग पर भी है। इसी से बचाव के लिए एक ऐसा गेट बनाया, जिसे क्रॉस करते समय वाहन की उच्चता का पता चल जाता है और स्वतः अलार्म बजता है और फाटक बंद हो जाता है।

विविध सुर्खियों में

संकलन : मृत्युंजय ठाकुर, पूर्वी चम्पारण

अब सुबह की प्रार्थना सभा में सकारात्मक कथन होंगे शामिल

जागरण संवाददाता, पटना : केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने सभी स्कूलों के लिए सुबह एसेंबली के फार्मेट में बदलाव किया है। बोर्ड ने सुबह की प्रार्थना सभा में सकारात्मक कथन को शामिल करने का निर्देश दिया है। यह पहल विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और समग्र विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया है। सीबीएसई का मानना है कि विद्यार्थियों के दिन की शुरुआत सकारात्मक विचारों से होनी चाहिए ताकि उनमें आत्मविश्वास, एकाग्रता और मानसिक संतुलन बेहतर हो सके। बोर्ड ने सभी स्कूलों के प्राचार्यों को सलाह दी कि नियमित रूप से सकारात्मक बातें करने से विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति, आत्मविश्वास, आत्म छवि और संतुलन में सुधार होगा। इसके लिए बोर्ड की ओर स अलग-अलग प्वाइंट शेयर की गई है। प्रतिदिन प्रार्थना सभा में दिए गए प्वाइंट में से एक से दो सरल, आयु-उपयुक्त अफर्मेशन को शामिल करने को कहा है। यह ख्याल रखना होगा कि वाक्य आत्म संयम, सम्मान और स्वास्थ्य से संबंधित हो। प्रत्येक सकारात्मक बातें अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषा में होगी, ताकि सभी बच्चे उसे समझें और उसे अपनी दिनचर्या में शामिल करें।सीबीएसई के के सचिव हिमांशु गुप्ता ने कहा कि विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक-भावनात्मक विकास को सशक्त बनाने के उद्देश्य से यह एक सराहनीय पहल साबित होगी।

इन बातों पर रहेगा ध्यान

- मैं हमेशा खुश रहता हूं
- मैं हर परिस्थिति में शांत और स्थिर रहता हूं
- मेरी एकाग्रता और स्मरण शक्ति बेहतर है
- मैं स्वास्थ्यवर्धक भोजन करता हूं। मेरा शरीर निरोगी है
- मैं गैजेट्स का उपयोग केवल पढ़ाई के लिए करता हूं
- मैं सबका सम्मान करता हूं। मैं प्रकृति का सम्मान करता हूं

शिक्षक सम्मान/पुरस्कार-एक जिम्मेदारी, एक जागरूकता-मृत्युंजय कुमार

डॉ. बिपिन बिहारी मौर्य, कोऑर्डिनेटर मौर्य ध्वज एक्सप्रेस, बिहार।

पटना। हम सभी भली-भांति जानते हैं कि शिक्षक सम्मान किसी भी शिक्षक के नवाचार, मेहनत और समर्पण का प्रतीक होता है। ऐसे में यह जरूरी है कि सम्मान उसी मंच से मिले जहां पारदर्शिता, सटीक मूल्यांकन और प्रमाणिकता हो ताकि सम्मान की गरिमा बनी रहे। हाल के दिनों में कुछ ऐसे मंच भी उभर आए हैं जो शिक्षकों को सम्मान के नाम पर भ्रमित कर रहे हैं। बिना किसी ठोस मापदंड के पुरस्कार देना। और सबसे चिंताजनक- सम्मान के नाम पर शुल्क (पैसा) लेना। क्या कोई सम्मान खरीदा जाना चाहिए..? क्या केवल फोटो, वीडियो या भुगतान करके कोई भी शिक्षक "सम्मानित" कहलाने का अधिकारी है..? मृत्युंजय कुमार, शिक्षक, नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला प्र-खंड-पताही जिला-पूर्वी चंपारण ने कहा कि ऐसी प्रथाएं न केवल शिक्षक समुदाय के विश्वास को ठेस पहुंचाती हैं बल्कि सम्मान की गंभीरता को भी कम करती हैं। हमें इन भ्रामक गतिविधियों से सावधान रहने की आवश्यकता है और ऐसे मंचों का साफ तौर पर विरोध करना चाहिए ताकि किसी भी शिक्षक को आर्थिक और भावनात्मक रूप से ठगा न जा सके। सच्चा सम्मान उसे मिलना चाहिए जिसने वास्तव में शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार किया हो, बच्चों के भविष्य को संवारने में कुछ नया और असरदार किया हो—ना कि उसे, जो केवल तस्वीरें खड़ा कर या पैसे देकर मंचों की रेटिंग बढ़ा रहा हो। बिहार में कई शिक्षक नवाचार कर रहे हैं, लेकिन अपने कार्यों को सही पहचान तभी मिल पाएगी जब वे ऐसे प्लेटफॉर्म को चुनें जो पारदर्शी हो, निःस्वार्थ भाव से काम करता हो और बिना किसी शुल्क के शिक्षकों के कार्य को आगे लाने का प्रयास करता हो। इसी संदर्भ में टीचर्स ऑफ बिहार-द चेंज मेकर्स एक ऐसा समूह है जोः- पिछले छह वर्षों से शिक्षकों के नवाचार को निःशुल्क बढ़ावा दे रहा है। किसी भी प्रकार का शुल्क लिए बिना शिक्षकों को राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिला रहा है।एनसीईआरटी एवं एससीईआरटी जैसी संस्थाओं द्वारा भी इसके कार्यों की सराहना की जा चुकी है।बालमंच, प्रज्ञानिका, अभिमत, बालमन, दैनिक ज्ञानकोष,चेतना जैसी कई पत्रिकाओं एवं सैकड़ो कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों और विद्यार्थियों की प्रतिभा को मंच प्रदान करता है। टीचर्स ऑफ बिहार का उद्देश केवल और केवल शिक्षकों के कार्य को पहचान दिलाना है, न कि किसी प्रकार की आर्थिक गतिविधि करना। यदि कहीं भी सम्मान के नाम पर शुल्क वसूली या भ्रामक गतिविधियां चल रही हैं, तो हम सभी की ज़िम्मेदारी है कि इसका विरोध करें ताकि शिक्षकों की मेहनत और सम्मान की गरिमा बनी रह सके।तो आइए, सही मंच चुनें, शिक्षक सम्मान की पवित्रता को बनाए रखें और अपने नवाचार को उस ऊंचाई तक पहुंचाएं जहां वह वास्तविक रूप में सराहा जाए। हमें तय करना होगाः-क्या हम उस भीड़ का हिस्सा बनेंगे जो नाम के सम्मान के पीछे भागती है, या उस सोच का जो सम्मान की सच्ची परिभाषा को जिंदा रखती है...? आइए, जिम्मेदार बनें। सही मंच चुनें। गलत प्रवृत्तियों का विरोध करें। और शिक्षक सम्मान की गरिमा को बनाए रखें।

शिक्षा में संवाद और सहभागिता की नई शुरूआत, डॉ. सिद्धार्थ जुड़े शिक्षकों के साथ

बिहार कथा / पटना

बिहार के शिक्षा जगत से जुड़ी एक बड़ी और उत्साहजनक खबर सामने आई है। शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ. एस. सिद्धार्थ ने राज्य की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी टीचर्स ऑफ बिहार द चेंज मेकर्स फेसबुक ग्रुप से जुड़ कर शिक्षकों और शिक्षा व्यवस्था के प्रति अपनी सक्रिय भागीदारी का परिचय दिया है।

इस अवसर पर टीचर्स ऑफ बिहार के संस्थापक शिव कुमार ने कहा कि सरकार के इतने उच्च पदस्थ अधिकारी का हमारे ग्रुप से जुड़ना न केवल गर्व का विषय है, बल्कि यह बिहार के सरकारी विद्यालयों, शिक्षकों और छात्रों के हित में किए जा रहे सार्थक प्रयासों की मान्यता भी है। यह हम सभी शिक्षकों के लिए प्रेरणादायक क्षण है। प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार और प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने संयुक्त रूप से कहा कि, डॉ. एस. सिद्धार्थ सर की उपस्थिति, कमेंट्स और मार्गदर्शन ने शिक्षकों का मनोबल बढ़ाया है। इससे शिक्षा जगत में संवाद और सहभागिता की नई परंपरा की शुरूआत हुई है, जो एक सशक्त, सकारात्मक और उत्तरदायी शैक्षणिक वातावरण के निर्माण की दिशा में बड़ा कदम साबित होगा। टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने इस पहल का स्वागत करते हुए कहा कि, शिक्षा में सहभागिता और संवाद की इस नई परंपरा को हम सभी अभिनंदन करते हैं। हमें विश्वास है कि यह जुड़ाव शिक्षकों और शिक्षा व्यवस्था दोनों के लिए लाभकारी सिद्ध होगा। शिक्षकों और शिक्षा व्यवस्था को लेकर फेसबुक ग्रुप टीचर्स ऑफ बिहार लंबे समय से प्रदेश में शिक्षकों के बीच लर्निंग एक्सचेंज, नवाचार और सामाजिक सरोकार को लेकर सक्रिय है। अब शिक्षा विभाग के शीर्ष अधिकारी के जुड़ने से इस मंच को नई दिशा और ऊर्जा मिलने की उम्मीद जताई जा रही है।

6ठी से 8वीं के बच्चों के लिए विज्ञान और गणित की हस्तपुस्तिका बनेगी

(आज शिक्षा प्रतिनिधि)

पटना। राज्य के 6ठी से 8वीं कक्षा के बच्चों के लिए विज्ञान और गणित की प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग हस्तपुस्तिका बनेगी। प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग हस्तपुस्तिका राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद (एनसीईआरटी) द्वारा प्रकाशित विज्ञान और गणित पुस्तिका पर आधारित होगी।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी) के नेतृत्व में और मंत्राफोरचेंज के सहयोग से राज्य के सभी मध्य विद्यालयों के 6ठी से 8वीं कक्षा के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद (एनसीईआरटी) द्वारा प्रकाशित विज्ञान और गणित पुस्तिका पर आधारित प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग हस्तपुस्तिका के विकास हेतु चार दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गयी।

इस संरचना में लर्निंग आउटकम, करिकुलर गोल एंड कम्पीटेंसी, गोल्ड स्टैंडर्ड फ्रेमवर्क दक्षता आधारित शिक्षण, सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ सहज रूप से 'क्यों और कैसे' की समझ विकसित हो सके- का ध्यान रखा गया। मूलतः यह बालमन के उस पीढ़ी को एक अवसर प्रदान करता है जिसमें अभी-अभी सोचना, तर्क करना, अपनी बात मनवाना और सीखना शुरू कर दिया है। छात्रों की जिज्ञासा उनकी रुचियाँ और विवेचनात्मक चिंतन के कौशल- इन बातों को ध्यान में रखते हुए पाठों की संरचना की जा रही है।

दरअसल, प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग (पीबीएल) पद्धति के अंतर्गत गणित और विज्ञान की विभिन्न अवधारणाओं के व्यावहारिक पक्ष को दैनिक जीवन में लागू करके बेहतर परिणाम प्राप्त करने और सीखने की प्रक्रिया को बच्चों को समझाया जा सकता है। इससे अपने आस-पास की वस्तुओं और घटनाओं को देखने, समझने और करने का तरीका बदल जा सकता है साथ ही एक नये दृष्टिकोण का विकास हो सकता है।

भोजपुरी में पढ़ाया जायेगा सरकारी स्कूलों में कक्षा तीन तक के छात्रों को :डॉ सिद्धार्थ

संवाददाता, पटना

शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ एस सिद्धार्थ ने शिक्षा की बात, हर शनिवार में सवालों का जवाब देते हुए कहा है कि बिहार के सरकारी स्कूलों में कक्षा तीन तक के छात्रों को भोजपुरी में पढ़ाया जायेगा. उन्होंने कहा कि स्कूलों में टाइम मैनेजमेंट भी सिखाया जायेगा, ताकि शिक्षक के साथ छात्र अपने सभी काम समय से पूरा कर लें. स्कूलों में प्रार्थना, संगीत, सांस्कृतिक कार्यक्रम तेज आवाज में होगा. इसके लिए लाउडस्पीकर लगाया जायेगा. ऐसा करने के पीछे शिक्षा विभाग का उद्देश्य है कि स्कूल में होने वाले कार्यक्रम की आवाज ग्रामीणों तक पहुंचे. डॉ सिद्धार्थ ने कहा कि इससे स्कूलों में होने वाली गतिविधियों के बारे में सभी लोगों को जानकारी मिलेगी. साथ ही जो छात्र गैर हाजिर होते हैं, उनके अभिभावकों को भी पता चलेगा कि स्कूल में पढ़ाई हो रही है और उनका बच्चा घर पर है. इससे अभिभावक खुद अपने बच्चों को खुद स्कूल तक पहुंचा देंगे. उन्होंने कहा कि स्कूलों में छात्रों के नामांकन को बढ़ाने के लिए मुखिया, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, जीविका दीदी लोगों के साथ बैठक करेंगी. इस दौरान प्रत्येक लोगों को समझा करके उनके बच्चों का नामांकन स्कूल में करायेंगे. उन्होंने कहा कि चेतना सत्र में गैर शिक्षक कार्य होगा. छात्रों को राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान, प्रार्थना, योग व राष्ट्रभावना को जागृत करने वाले एक्टिविटी सिखायी जायेगी. उन्होंने कहा कि बच्चों सम्मान, किससे किस तरह से बात किया जाए, साफ-सफाई के बारे में भी बताया जायेगा. बिहार के छह जिलों में स्थित 30 स्कूलों में एक मई से ऑनलाइन अटेंडेंस लगेगा.

सरकारी स्कूलों के लिए वार्षिक कैलेंडर किया गया जारी

हर माह अंतिम शनिवार होगी पीटीएम, थीम भी तय

शिक्षा विभाग

संवाददाता,पटना

शिक्षा विभाग ने सरकारी स्कूलों के शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए शिक्षक-अभिभावक मीटिंग (पीटीएम) के लिए वार्षिक कैलेंडर जारी किया है. प्रभारी प्राथमिक शिक्षा निदेशक विनायक मिश्र ने सभी जिला शिक्षा पदाधिकारी (डीइओ) को जारी पत्र में जरूरी दिशा-निर्देश देते हुए पीटीएम कैलेंडर भेजा है. पीटीएम हर महीने के अंतिम शनिवार को होगी. निदेशक विनायक मिश्र ने पत्र में डीइओ को बताया कि क्षेत्र भ्रमण के दौरान देखा गया है कि स्कूलों में पीटीएम अलग-अलग तरीके से आयोजित की जा रही है. इससे उसका धरातल पर प्रभाव नहीं दिख रहा है. इसलिए पीटीएम को और अधिक कारगर व प्रभावी बनाने के लिए वार्षिक कैलेंडर तैयार किया गया है. वार्षिक कैलेंडर में प्रत्येक माह के लिए एक थीम निर्धारित की गयी है. प्रत्येक थीम में विशेष बिंदु तय किये गये हैं, ताकि पीटीएम में एकरूपता दिखायी दे. पत्र के अनुसार हर माह पीटीएम के पूर्व राज्य स्तर से वर्चुअल मोड के जरिये संबंधित महीने की थीम पर जरूरी मार्गदर्शन दिया जायेगा. इस बैठक में बच्चों के अभिभावक स्कूल की सुविधाओं मसलन क्लासरूम, पुस्तकालय, स्मार्ट क्लास, पिंक रूम, शौचालय व पीने के पानी, पोषण वाटिका और खेल परिसर देखेंगे. शिक्षक भ्रमण के दौरान सभी सुविधाओं की उपयोगिता के बारे अभिभावक को जानकारी देंगे.

किस माह क्या होगी पीटीएम की थीम

तिथि	थीम
31 मई	पढ़ेंगे, बढ़ेंगे और सीखेंगे हम
28 जून	उपस्थिति और सरकारी योजनाएं
26 जुलाई	व्यावसायिक कौशल और स्वास्थ्य, स्वच्छता व पोषण
30 अगस्त	खेलो और सीखो
27 सितंबर	निपुण बनेगा बिहार हमारा
25 अक्तूबर	छठ व दीपावली की छुट्टी के कारण पीटीएम नहीं होगी
29 नवंबर	हर बच्चा होगा अब स्कूल का हिस्सा
24 दिसंबर	हरेक बच्चा श्रेष्ठ बच्चा
31 जनवरी	हम और आप मिल कर करेंगे बच्चों का समग्र विकास
28 फरवरी	परीक्षा की तैयारी, हमारी जिम्मेदारी
29 मार्च	प्रवेश से प्रगति तक विद्यालय और अभिभावक साथ-साथ

'टीचर्स ऑफ बिहार' ने स्थापना के छह वर्ष किये पूरे, एएन सिन्हा इंस्टीट्यूट में हुआ कार्यक्रम

वार्षिकोत्सव : नवाचार से बच्चों को पढ़ाने वाले शिक्षक हुए सम्मानित

पटना, कार्यालय संवाददाता। [illegible]

मुखपत्र अभिमत का विमोचन करते एसीएस डॉ. एस सिद्धार्थ, शिक्षा विभाग के सचिव अजय यादव, निदेशक सज्जन आर व अन्य।

- शिक्षा विभाग के एसीएस ने टीओबी के नवाचारी परियोजना का शुभारंभ किया
- प्रधानमंत्री पोषण योजना गणक, द्रोणविद्या और प्रोजेक्ट शिक्षक साथी का शुभारंभ

एएन सिन्हा इंस्टीट्यूट में आयोजित कार्यक्रम में सम्मानित हुए शिक्षक।

बच्चों को सर्वोपरि रख कल्याण करें

कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ. एस सिद्धार्थ ने समूह से जुड़े शिक्षकों के नवाचार की सराहना की। कहा कि शिक्षक की नौकरी अन्य नौकरियों से अलग है। इन पर बेहतर समाज निर्माण की जिम्मेदारी होती है। इसलिए शिक्षक काम के भविष्य यानी बच्चों को सर्वोपरि रखें। अपनी तकलीफ को भूल कर बच्चों के कल्याण के लिए कार्य करें। शिक्षकों का कल्याण करने के लिए सरकार है। मौके पर डॉ. सिद्धार्थ, सचिव, निदेशक एससीईआरटी ने नवाचारी शिक्षकों को सम्मानित भी किया।

समूह के कार्यों की एनसीईआरटी ने भी की है सराहना [illegible]

प्राचीन नालंदा महाविहार शैक्षणिक संस्थानों के नेटवर्क का केंद्र बिंदु था

हि विशेष

■ आशुतोष कुमार आर्य

- मगध व्यापार मार्ग का किया निर्धारण, बीहड़ रास्तों से था भरा पड़ा
- द्वारपाल के समक्ष अग्निपरीक्षा के बाद ही मिलता था प्रवेश

प्राचीन नालंदा महाविहार का टेम्पल नंबर तीन।

क्या कहते हैं कुलपति

नव नालंदा महाविहार के कुलपति प्रो. सिद्धार्थ सिंह सिंह ने बताया कि फिल्म निर्माण के पहले नालंदा पर आधारित तमाम प्राचीन ग्रंथों के अलावा हजारों पुस्तकों का बारीक अध्ययन किया गया है। इसमें दर्जनों विद्वान साथियों का अहम योगदान है। यह नालंदा की वास्तविक पहचान के कई रहस्यों पर से पर्दा हटाने में सफल होगी।

बिहारशरीफ । प्राचीन नालंदा महाविहार महज इकलौता शैक्षणिक संस्थान नहीं, वरन ऐसे संस्थानों का बड़ा नेटवर्क था। इन संस्थानों का केन्द्रबिन्दु नालंदा था, जो अन्य संस्थानों की देखरेख व संचालन की पूरी नियमावली बनाता था। यह जानकारी 'नालंदा : ए जर्नी थ्रू टाइम' (नालंदा : समय की यात्रा) व 'गुरपा : द लास्ट फुटस्टेप्स ऑफ महाकश्यप' (गुरपा : महाकश्यप के अंतिम पदचिह्न) नामक दो फिल्मों के माध्यम से लोगों के बीच लाने की तैयारी है। इसका निर्माण केन्द्रीय संस्कृति मंत्रालय द्वारा संचालित नव नालंदा महाविहार व द लाइट ऑफ द बुद्ध धम्म फाउंडेशन इंटरनेशनल की इंडिया शाखा ने की है। इन फिल्मों का प्रदर्शन राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में 8 अप्रैल किया जाना है। बताया गया है कि विश्व के अन्य देशों से आने वाले यात्रियों व शिक्षार्थियों द्वारा उपयोग में लाये जाने वाले 'मगध व्यापार मार्ग' का भी निर्धारण किया गया है। यह मार्ग काफी बीहड़ रास्तों से भरा पड़ा था। सैकड़ों किलोमीटर मरुस्थल के साथ ही दर्जनों पहाड़ों, नदियों व दर्राओं से होकर गुजरता था। कुछ शिक्षार्थी नालंदा पहुंचने के पहले ही लौट जाते थे या दम भी तोड़ देते थे। यह रास्ता सिर्फ विश्व के अन्य देशों से आने वाले शिक्षार्थियों के लिए ही उपयोगी नहीं था, बल्कि अनाज, सोना-चांदी, हीरे सं बेशकीमती पत्थरों के बनी नायाब मूर्तियों का ममगध साम्राज्य से व्यापार होता था।

अतिरिक्त वर्ग कक्ष, बोरिंग, बेंच-डेस्क और अन्य जरूरत होगा पूरा

स्कूलों की जरूरत को एचएम खुद करेंगे ई शिक्षा कोष पर अपलोड

- स्कूल की चारदीवारी का निर्माण कराना पहली प्राथमिकता
- अतिरिक्त वर्ग कक्ष से ले बेंच डेस्क की जरूरत को पोर्टल पर डालेंगे

शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव ने डीईओ को भेजा पत्र

जिला शिक्षा कार्यालय, सीवान।

आधारभूत संचनाओं की कमी दूर करने की रणनीति के तहत काम

[illegible]

प्रज्ञानिका

www.teachersofbihar.org

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा

प्रज्ञानिका

www.teachersofbihar.org

अगर आप एक शिक्षक या शिक्षा के अन्य हितधारक हैं और शिक्षा में अपने नवाचार, अनुभव या विचारों को साझा करना चाहते हैं, तो 'प्रज्ञानिका' आपके लिए एक बेहतरीन मंच है।

इस पत्रिका के माध्यम से आप अपने शैक्षिक प्रयोगों, अध्यापन पद्धतियों और नवाचारों को पूरे देश में पहुंचा सकते हैं।

https://chat.whatsapp.com/Ko2ST5AI7ohGWj1v3Ff4On

हमसे जुड़ने के लिए उपर दिए गए लिंक पर क्लिक करें या QR कोड स्कैन करें

PRAGYANIKA
WhatsApp group